केवल आप के लिये
गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचाना है तो भारतीय बस्ती दैनिक वेब www.bhartiyabasti.com और उसका छपा संस्करण सबसे बेहतर माध्यम
सम्पर्क-bhartiyabasti@gmail.com
मो0 9450567450| 9336715406

दैनिक
भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती
www.bhartiyabasti.com
के लिये विज्ञापन बुक कराये।
विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम
सम्पर्क
मो0 9336715406
8400925463
भारतीय बस्ती आर्मत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :48 अंक 65 शुक्रवार 25 सितम्बर 2026 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

एक नजर

शक्ति सिंह हत्याकांड के आरोपी नागेश प्रताप को मिली जमानत

–भारतीय बस्ती संवाददाता–
बस्ती। बहुचर्चित शक्ति सिंह हत्याकांड में आरोपी भाजपा नेता राणा नागेश प्रताप सिंह को हाई कोर्ट से जमानत मिल गई है। वह करीब दो साल से गोंडा जेल में बंद थे। जमानत मिलने के बाद अब उनके जेल से बाहर आने का रास्ता साफ हो गया है। शक्ति सिंह की हत्या सितंबर 2024 में नगर थाना क्षेत्र के रानीपुर बेलाड़ी गांव में हुई थी। 24 सितंबर को वह गांव के एक व्यक्ति के अंतिम संस्कार में शामिल होने गए थे। आरोप है कि वहां से लौटते समय राणा नागेश प्रताप सिंह उन्हें अपनी गाड़ी में बैठाकर ले गए थे। इसके बाद शक्ति सिंह का कोई पता नहीं चला। शक्ति सिंह का शव दो दिन बाद दुबौलिया थाना क्षेत्र में सरयू नदी के किनारे एक बोरे में मिला था। उनके सिर पर चोट के निशान भी बताए गए थे। शव मिलने के बाद मामले ने जिले में काफी चर्चा थी।

शक्ति सिंह के परिजनों ने पुरानी रंजिश का आरोप लगाते हुए राणा नागेश प्रताप सिंह समेत अन्य लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया था। पुलिस की जांच के बाद मामला न्यायालय पहुंचा। राणा नागेश प्रताप सिंह ने बाद में न्यायालय में सरेंडर किया था, जिसके बाद उन्हें जेल भेज दिया गया था।

राणा नागेश प्रताप सिंह करीब दो साल से गोंडा जेल में बंद थे। अब हाई कोर्ट से जमानत मिलने के बाद उनके जेल से बाहर आने का रास्ता साफ हो गया है। मामले में आगे की न्यायिक प्रक्रिया जारी रहेगी।

26–27 सितम्बर को प्रभावित रहेंगी कई ट्रेनें

–भारतीय बस्ती संवाददाता–
बस्ती। गोरखपुर–गोंडा रेलखंड पर ऑटोमेटिक सिगनलिंग का काम 26 और 27 सितंबर को रेल यात्रियों के लिए परेशानी खड़ी कर सकता है। स्वामी नारायण छपिया, मसकनवां, लखपतनगर और मनकापुर स्टेशनों के बीच 18.82 किलोमीटर के रेलखंड पर नॉन–इंटरलॉक कार्य होगा। इसके चलते रेलवे ने कई ट्रेनों को रद किया है और उनके मार्ग व संचालन में बदलाव किया है। बस्ती स्टेशन से गुजरने वाली कई ट्रेनों के ठहराव पर भी असर पड़ेगा। सबसे ज्यादा असर 26 सितंबर को बस्ती–प्रयागराज संगम एक्सप्रेस (14232) और प्रयागराज संगम–बस्ती एक्सप्रेस (14231) पर दिखेगा। इन दोनों ट्रेनों का संचालन बस्ती के बजाय अयोध्या धाम तक ही रहेगा। इसका मतलब है कि 26 सितंबर को बस्ती से प्रयागराज संगम जाने वाले यात्रियों को इस ट्रेन की सुविधा नहीं मिल पाएगी।

इसी तरह 26 सितंबर को लोकमान्य तिलक टर्मिनस–गोरखपुर एक्सप्रेस (20103) अपने बदले मार्ग गोंडा–बढ़नी–गोरखपुर से चलेगी। यह ट्रेन बस्ती में नहीं रुकेगी। डिब्रुगढ़–गोमती नगर एक्सप्रेस (15949) भी बस्ती स्टेशन पर नहीं ठहरेगी। बरौनी–नई दिल्ली, नई दिल्ली–बरौनी, दरभंगा–नई दिल्ली और नई दिल्ली–दरभंगा विशेष ट्रेनों का भी मार्ग बदला गया है। ये ट्रेनें भी बस्ती में नहीं रुकेंगी।

गोरखपुर–गोंडा सवारी गाड़ी (55093) 26 और 27 सितंबर को रद रहेगी। वहीं, गोंडा–गोरखपुर सवारी गाड़ी (55094) 27 और 28 सितंबर को रद रहेगी। गोरखपुर–बढ़नी और बढ़नी–गोरखपुर डेमू ट्रेनें भी 26 और 27 सितंबर को रद रहेंगी। रेलवे ने यात्रियों से अपील की है कि वे यात्रा पर निकलने से पहले अपनी ट्रेन के संचालन और ठहराव की स्थिति की जानकारी जरूर ले लें।

मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने सभी चुनावों में धांधली किया–राहुल गांधी

नई दिल्ली (आभा)। निर्वाचन आयोग में विवाद की खबरों के बीच मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार विपक्ष के निशाने पर आ गए हैं। राहुल गांधी ने कहा कि लोकसभा चुनाव और पिछले कई विधानसभा चुनावों में धांधली हुई है। अभी जितने सबूत सामने आए हैं। उससे कई ज्यादा सबूत मौजूद हैं। इसके बाद राहुल गांधी ने पीएम मोदी और अमित शाह की वीडियो दिखाई। इसमें दोनों नेता लंबे समय तक भारत में एनडीए और भाजपा की सरकार होने का दावा करते हुए सुनाई देते हैं।

राहुल गांधी ने कहा कि एनडीए सरकार के खिलाफ एंटी इम्कबेंसी होती ही नहीं है। अटल बिहारी वाजपेयी के खिलाफ हुई। हर प्रधानमंत्री के साथ हुई। यहां तक कि प्रदेशों में भी मुख्यमंत्रियों के खिलाफ हुई है। लेकिन पीएम मोदी और भाजपा सरकारों के खिलाफ यह होता ही नहीं है। राहुल ने कहा कि वह एक राजनीतिक परिवार से आते हैं और जानते हैं कि ऐसे वर्षों तक सत्ता में रहने का दावा कोई नहीं कर सकता। इंदिरा गांधी ने बांग्लादेश युद्ध जीता। वह अपनी लोकप्रियता के शिखर पर पहुंच गईं। लेकिन इसके कुछ साल बाद ही वह चुनाव हार गईं। यह हर पार्टी के साथ हुआ है। लेकिन भाजपा के साथ ऐसा नहीं हुआ। दुनिया के किसी भी लोकतंत्र

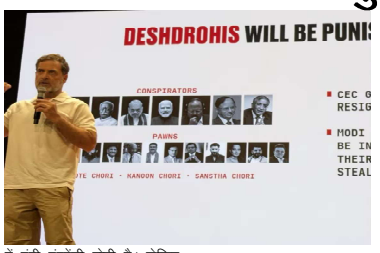

में एंटी इंक्बेंसी होती है। लेकिन यहां यह गायब हो गई। अब हमें इसका साफ जबाव मिल गया है।

राहुल गांधी ने कहा– यह हम इस बात को बार–बार कहते आ रहे हैं कि वोट में परेशानी है। क्योंकि अगर वोट खत्म कर दिया, तो न कानून का कुछ मतलब है, न संस्थाओं का मतलब है। यह पूरे देश को पता चल रहा है कि हिंदुस्तान का जो वोट है। सभी संस्थाओं में आरएसएस के लोगों को भर दिया। अगर वोट चोरी हुई है, तो जो भी कानून बनाए गए हैं। वह सारे गैर–कानूनी हैं। क्योंकि वोट ही कानून का केंद्र है। मैं यह आज नहीं कह रहा हूं। मैं पिछले तीन साल से कह रहा हूं। हर बार मैंने सबूत दिया है। निर्वाचन आयोग की जिम्मेदारी है कि वोट की रक्षा करें। इसके आसपास ही सब चलता है। अगर वोट ही सुरक्षित नहीं है तो फिर कुछ नहीं है। उन्होंने कहा कि मैं कुछ भी हवा में नहीं कह रहा हूं। इससे भी ज्यादा सबूत मौजूद हैं।

राहुल गांधी ने कहा कि वह इस बात को 100 प्रतिशत मानते हैं कि लोकसभा चुनाव और पिछले कई विधानसभा चुनावों में धांधली हुई थी। राहुल ने कहा कि वह इस बात को पिछले कई समय से कहते आ रहे हैं। लेकिन अब दो चुनाव आयुक्त भी कह रहे हैं। ज्ञानेश कुमार को पीएम मोदी और अमित शाह ने चुना हैं। मैंने अपनी चिट्ठी में लिखा था कि मुख्य चुनाव आयुक्त को चुनने की प्रोसेस स्वतंत्र होनी चाहिए। उस पर पीएम या किसी का दबाव नहीं होना चाहिए। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। वोट चोरी के साथ कानून चोरी होती है। जब कानून चोरी होती है। तो संस्था चोरी होती है। यही चेन बनी हुई है। आज वोट गया, कानून बनाने की प्रणाली गई।

राहुल गांधी ने कहा कि संस्थानों के अंदर से सूचना लीक हो रही है। 18 सितंबर को हमने आलंद वोट चोरी के बारे में बात की। 28 अक्तूबर से दोनों चुनाव आयुक्तों ने विरोध करना शुरू कर दिया। क्योंकि जनता का दबाव बढ़ना शुरू हो गया था।

राहुल ने कहा, 'समझने की कोशिश करें, वह दोनों क्या कहना चाहते हैं। वह कहना चाहते हैं कि देश में वोट एविजस्ट नहीं करता है। वह इसके लिए ज्ञानेश कुमार को ही जिम्मेदार मानते हैं। ज्ञानेश कुमार की नियुक्ति किसने की है। पीएम मोदी और अमित शाह ने।'

उन्होंने कहा कि हमारे पास इस मामले में बहुत सबूत हैं। जब हम इन्हें रिलीज करेंगे तो आप समझ जाएंगे कि क्या हो रहा है। हमारे चुनाव टूट चुके हैं। हमारे लोकसभा से पारित हुए बिल सवालों के घेरे में हैं क्योंकि सांसदों को चुनकर भेजने वाला संस्थान ही बर्बाद हो चुका है।

राहुल गांधी ने कहा कि ज्ञानेश कुमार को तुरंत इस्तीफा दे देना चाहिए। मैं ज्ञानेश कुमार को समझाना चाहता हूं कि यहां हो क्या रहा है। वह पढ़े लिखे हैं। मैं कहता हूं कि यह देश के साथ वोट चोरी है। उनके जूनियर्स ने सही काम किया है। ऐसे ही उन्हें भी बताना चाहिए। हमारे पास पूरे सबूत हैं जिससे यह साबित होगा। इसलिए समझना होगा। हम देश के लोकतंत्र को बगल में बैठकर मरने नहीं देंगे। इस काम करने वाले लोगों को आज नहीं तो कल सजा मिलेगी। ज्ञानेश कुमार को ढंग से सोचना होगा कि वह किस जगह पर हैं। अगर वह सामने आते हैं तो यह राष्ट्रभक्ति काम होगा। हम जानते हैं कि क्या है। हम इसे सामने लाएंगे।

भाजपा वाले नकली हिन्दू, बुलडोजर खत्म करेगा भाजपा को –अखिलेश यादव

रायबरेली (आभा)। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने यूपी में अपने चुनावी प्रचार का आगाज कर दिया है। गुरुवार को उन्होंने गांधी परिवार की परंपरागत सीट रायबरेली से च्व। रथयात्रा की शुरुआत की। वह कार से लखनऊ के निगोहा पहुंचे। वहां से रथ पर सवार होकर 50 किमी दूर रायबरेली के ऊप मैदान जनसभा की। भाजपा पर निशाना साधते हुए अखिलेश ने कहा, ' इस बार चुनाव लोधी बनाम योगी हो गया है। वोट का बुलडोजर इन्हें खत्म कर देगा।'

उन्होंने कहा, ये आज की लड़ाई नहीं है, हमारी–उनकी लड़ाई हजारों साल पुरानी है। पीडीए के लोग इन्हें हराने का काम करेंगे। हम निर्बल और कमजोर लोगों के साथ हैं। हम आरक्षण को बचाने के लिए खड़े हैं और हम हिंदुस्तानियत को बचाने के लिए खड़े हैं। ये लोग संविधान, कानून को नहीं मानते। भाजपा वाले नकली हिंदू हैं।

अखिलेश के स्वागत के लिए पहली बार उनकी रैली में 2 क्रेन मंगाई गईं। इससे 21 किलो की माला पहनाई गई। जनसभा के बाद अखिलेश सपा विधायक राहुल लोधी के आवास पर जाएंगे। यहां समाजवादी छात्रसभा के उन कार्यकर्ताओं से मुलाकात किया जिनकी 17 सितंबर को एबीवीपी कार्यकर्ताओं और पुलिस से झड़प हुई थी।

रास्ते में उन्होंने हनुमान मंदिर में दर्शन किया। गदा लहराई। रथ के साथ–साथ करीब 2–3 हजार से कार्यकर्ता मौजूद रहे। 200 गाड़ियां भी साथ चलीं। कार्यकता डीजे DJ पर डांस और नारेबाजी करते हुए रथ के साथ चले। रथ यात्रा के चलते लखनऊ–रायबरेली हाईवे पर जाम लग गया। इसमें योगी सरकार में मंत्री दिनेश सिंह का काफिला फंस गया।

इधर, रथयात्रा से पहले रायबरेली में अखिलेश के खिलाफ पोस्टर लगाए हैं। इनमें अखिलेश के साथ आजम खान, अतीक अहमद और मुख्तार अंसारी की तस्वीरें छपी हैं। लिखा है– 'अखिलेश यादव वापस जाओ', 'अखिलेश के माफिया, माफिया के अखिलेश'।

अखिलेश यादव ने सरकार पर निशाना साधते हुए गोंडा और वाराणसी की घटनाओं का जिक्र किया। गोंडा में सहनी समाज के एक युवक की सोशल मीडिया पर लिखने के कारण पीट–पीटकर हत्या कर दी गई।

यूजीसी का काला कानून वापस न हुआ तो छात्र देंगे करारा जबाब–दीन दयाल त्रिपाठी

–भारतीय बस्ती संवाददाता–
बस्ती। मेधा पार्टी द्वारा शिक्षा व्यवस्था में सुधार, यूजीसी के नये कानून की वापसी सहित 7 सूत्रीय मांगों को लेकर गांधीकला भवन परिसर में बापू प्रतिमा के निकट चल रहा धरना गुरुवार को 32 वें दिन भी जारी रहा। सबेरे से जारी बरसात के बावजूद लोग धरना स्थल पर जुटे और केन्द्र सरकार से मांग किया कि यूजीसी का काला कानून सरकार वापस ले वरना आगामी चुनावों में युवा, छात्र भाजपा को आईना दिखाने का काम करेंगे।

मेधा पार्टी के केन्द्रीय प्रवक्ता दीन दयाल त्रिपाठी ने कहा कि जब तक मांगे पूरी नहीं हो जाती मेधा का धरना अनवरत जारी रहेगा। कहा कि इस मसले पर केन्द्र सरकार की चुप्पी छात्र विरोधी मानसिकता को उजागर कर रहा है। भाजपा अंग्रेजों की तरह समाज में फूट डालो राज करो की नीति पर चल रही है, देश का छात्र अब इसे समझ चुका है। भाजपा सरकार पर यूजीसी को लेकर चुप्पी आने वाले चुनावों में भारी पड़ेगी।

मेधा पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता दीनदयाल तिवारी ने कहा कि शिक्षा में समानता और सामाजिक न्याय के लक्ष्य को हासिल करने के लिए पार्टी लगातार संघर्ष करती रहेगी। गरीब बच्चों को बेहतर शिक्षा और उनके अधिकार दिलाने के लिये संघर्ष जारी रहेगा। मेधा नेता पं. सुनील भट्ट कहा कि यूजीसी में नया कानून लाकर केन्द्र सरकार छात्रों को जाति धर्म में विभाजित करने का षड्यंत्र कर रही है। यह कानून वापस न हुआ तो देश को गंभीर परिणाम भोगने होंगे।

धरने के 32 वें दिन मुख्य रूप से बापू प्रतिमा के निकट धरना देने वालों में मुख्य रूप से प्रतीक मिश्र, सोनू चौधरी, सन्तोष शुक्ल, विशाल सिंह, दीपक शुक्ला, , वुजेश द्विवेदी, अजय कुमार चौधरी, राहुल त्रिपाठी, दीपक शुक्ल, रामरीका पाण्डेय, अंशू चौरसिया, विपुल सिंह के साथ ही मेधा के अनेक पदाधिकारी, सदस्य और विभिन्न संगठनों के लोग शामिल रहे।

–बापू प्रतिमा के समक्ष 32 वें दिन भी मेधा का धरना जारी

जयपुरिया स्कूल में तीसरी मंजिल से गिरकर पेंटर की मौत

–भारतीय बस्ती संवाददाता–
बस्ती। नगर थाना क्षेत्र स्थित जयपुरिया स्कूल में बुधवार को पेंटिंग करते समय एक युवक तीसरी मंजिल से नीचे गिर गया। हादसे में वह गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे पहले बहादुरपुर सीएचसी और बाद में महर्षि वशिष्ठ मेडिकल कॉलेज से जुड़े ओपेक हॉस्पिटल कैली की इमरजेंसी में भर्ती कराया गया। इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। मृतक के परिजनों ने स्कूल प्रबंधन पर सुरक्षा में लापरवाही का आरोप लगाया है।

मृतक की पहचान 30 वर्षीय वेद प्रकाश के रूप में हुई है। वह कलवारी थाना क्षेत्र के शहरानपुर गांव का रहने वाला था। वेद प्रकाश जयपुरिया स्कूल में पेंटिंग का काम कर रहा था। बुधवार दोपहर करीब 3.21 बजे वह स्कूल की तीसरी मंजिल से नीचे गिर गया। हादसे के बाद उसे गंभीर हालत में बहादुरपुर सीएचसी ले जाया गया।

बहादुरपुर सीएचसी से वेद प्रकाश को महर्षि वशिष्ठ मेडिकल कॉलेज से जुड़े ओपेक हॉस्पिटल कैली की इमरजेंसी में रेफर किया गया। अस्पताल में जांच के बाद ऑक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

मृतक की पहचान 30 वर्षीय वेद प्रकाश के रूप में हुई है। वह कलवारी

थाना क्षेत्र के शहरानपुर गांव का रहने वाला था। मृतक के भाई सूर्य नारायण ने स्कूल प्रबंधन पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने कहा कि हादसे की जानकारी परिवार को तत्काल नहीं दी गई। उनके अनुसार, वेद प्रकाश की कैली अस्पताल में शाम करीब 5 बजे मौत हो गई थी, जबकि स्कूल प्रबंधन की ओर से परिवार को इसकी सूचना करीब 7.30 बजे दी गई।

सूर्य नारायण ने स्कूल प्रबंधन पर सुरक्षा व्यवस्था में लापरवाही बरतने का आरोप लगाया। उन्होंने घटना की जांच कराने और जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। हालांकि, घटना के संबंध में स्कूल प्रबंधन का पक्ष सामने नहीं आया है। कैली अस्पताल की ओर से घटना की जानकारी पुलिस को दे दी गई है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

बस हादसे में 9 लोगों की जलकर मौत

ग्रेटर नोएडा (आभा)। ग्रेटर नोएडा में यमुना एक्सप्रेसवे पर हुए बस हादसे में 9 लोगों की जिंदा जलकर मौत हो गई। अब इस मामले में बड़ा अपडेट सामने आया है, जिससे ये साबित होता है कि बस ड्राइवर ने कई बार ट्रैफिक नियमों की भी अनदेखी की थी। मिली जानकारी के अनुसार, जिस बस में आग लगने से 9 यात्रियों की मौत हुई, उसपर कुल 1 लाख 70 हजार रुपए की फाइन लगी हुई है।

मिली जानकारी के अनुसार, यमुना एक्सप्रेसवे पर आग का शिकार हुई बस पर कुल 60 फाइन लगे थे, जिसमें से 20 फाइन अभी तक जमा नहीं की गई थी। बस नंबर बीआर32पीए8647 पर कुल 1.70 लाख रुपए का फाइन बकाया है। इस बस का आखिरी बार चालान दिल्ली के मयूर विहार इलाके में हुआ था। मयूर विहार में बस का चालान छत पर सामान लादने की वजह से किया गया था। तब बस पर कुल 18500 रुपए का चालान काटा गया था। यमुना एक्सप्रेसवे पर हुए इस बस हादसे के बाद ड्राइवर और कंडक्टर को गिरफ्तार कर लिया गया है। हादसे को लेकर जानकारी देते हुए

पुलिस ने बताया कि यह बस दिल्ली के कश्मीरी गेट से बिहार की तरफ जा रही थी, तभी एसी में ब्लास्ट हुआ और इंजन से आग निकलने लगी। आग लगने के बाद कई लोग बाहर निकल गए, लेकिन 9 लोग नहीं निकल सके और बस में ही जिंदा जल गए।

इस मामले को लेकर जानकारी देते हुए पुलिस ने बताया कि इस हादसे में जिन लोगों को गंभीर चोटें लगी हैं, उन्होंने ड्राइवर और कंडक्टर पर बड़ा आरोप लगाया है। बताया जा रहा है कि हादसे से पहले अंदर बैठे यात्रियों को तार के जलने की महक आ रही थी, जिसकी शिकायत भी की गई। शिकायत के बावजूद ड्राइवर ने बस नहीं रोकी और बस के केबिन में बैठकर सिगरेट पीते रहे। इसके कुछ देर बाद ही हादसा हो गया और इसमें जलकर 9 लोगों की मौत हो गई।

सम्पूर्ण भागीदारी के लिये प्रदर्शनः राष्ट्रपति को भेजा ज्ञापन

–भारतीय बस्ती संवाददाता–
बस्ती।आजाद समाज पार्टी (कांशीराम) और भीम आर्मी ने गुरुवार को कलेक्ट्रेट पर प्रदर्शन किया। यह प्रदर्शन 'संपूर्ण भागीदारी आंदोलन' के तहत किया गया। पार्टी सामाजिक न्याय, समान अवसर और वंचित वर्गों के उचित प्रतिनिधित्व की मांग कर रही थी। प्रदर्शन का नेतृत्व जिला अध्यक्ष अजय कुमार ने किया। प्रदर्शन के बाद राष्ट्रपति को संबोधित एक ज्ञापन जिलाधिकारी के प्रशासनिक अधिकारी को सौंपा गया। पार्टी ने शिक्षा, रोजगार, राजनीति, प्रशासन, न्यायपालिका और निर्णय लेने वाली संस्थाओं में एससी, एसटी, ओबीसी और महिलाओं की प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित करने की मांग की।

ज्ञापन में बताया गया कि आरक्षण सामाजिक भेदभाव, छुआछूत, सामाजिक–शैक्षणिक कमी और कम प्रतिनिधित्व को खत्म करने का संवैधानिक तरीका है। पार्टी ने आरक्षित और बैकलॉग के खाली पदों पर

जल्द भर्ती करने की मांग की।

उनकी मुख्य मांगों में महिला आरक्षण में 50 प्रतिशत भागीदारी तय करना शामिल है। इसके साथ ही दलित, आदिवासी और पिछड़े वर्ग की महिलाओं के लिए आरक्षण के भीतर आरक्षण लागू करने की भी मांग की गई। स्थानीय निकायों में भी महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण देने की बात कही गई।

पार्टी ने मीडिया संस्थानों में भी लंबे समय से वंचित समाजों की पर्याप्त भागीदारी और प्रभावी प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने की मांग की। सफाईकर्मियों के लिए आउटसोर्सिंग व्यवस्था खत्म कर स्थायी नियुक्ति देने की बात कही गई। इसके अलावा, खाली पदों पर भर्ती, बैकलॉग पूरा करने, सम्मानजनक वेतन, समान काम के लिए समान वेतन, सामाजिक सुरक्षा, पेंशन और बीमा जैसी सुविधाएं देने की भी मांग की गई।

ज्ञापन में सीवर और सेप्टिक टैंक की सफाई में इंसानों के उतरने पर पूरी तरह रोक लगाने की मांग की गई। इसके बजाय आधुनिक मशीनों से सफाई कराने पर जोर दिया गया। अगर सफाई के दौरान किसी कर्मचारी की मौत होती है, तो उसके परिवार को 30 लाख रुपये मुआवजा, परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी और पुनर्वास देने की मांग भी रखी गई।

अल्पसंख्यक धार्मिक स्थलों के खिलाफ हुई कार्रवाई की निष्पक्ष जांच और अल्पसंख्यक छात्रों की छात्रवृत्ति नियमित करने की भी मांग की गई। ज्ञापन के जरिए राष्ट्रपति से अनुरोध किया गया कि वे संबंधित संवैधानिक संस्थाओं और केंद्र सरकार का ध्यान इन मांगों की ओर दिलाएं।

मौके पर विशाल कुमार गौतम, श्रवण प्रताप वर्मा, मूलचंद आजाद, सोनू सिंह गौतम, राहुल राव समेत कई अन्य लोग शामिल रहे।

सीनियर बेसिक शिक्षक संघ की बैठक में उठा पुरानी पेंशन बहाली का मुद्दा

–भारतीय बस्ती संवाददाता–
बस्ती। गुरूवार को उ०प्र० सीनियर बेसिक शिक्षक संघ के जिला इकाई की एक बैठक जिलाध्यक्ष शिव शंकर पाण्डेय की अध्यक्षता में प्रेस क्लब के सभागार में सम्पन्न हुई। बैठक में पुरानी पेंशन, प्रोन्नत वेतन मान, ग्रेच्युटी आदि से सम्बन्धित शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई और उनके समाधान के लिए आवश्यक कदम उठाने का निर्णय लिया गया।

बैठक को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि प्रांतीय अध्यक्ष श्रवण कुमार सिंह ने कहा कि पुरानी पेंशन हमारा हक है और बुढ़ापे का सहारा है और इसे हम हर हाल में लेकर रहेंगे, इसके लिए हमारा संघ अन्य संघो से कदम ताल करते हुए राष्ट्र व्यापी आन्दोलन को तैयार है। विशिष्ट अतिथि, प्रदेश संयुक्त मंत्री धीरेन्द्र प्रताप सिंह ने पुरानी पैंशन और प्रोन्नत वेतन मान जैसे मुद्दों पर आर–पार की लड़ाई का आह्वान किया।

संघ जिलाध्यक्ष शिव शंकर पाण्डेय ने कहा कि लम्बित सभी मुद्दों को लेकर संघ का संघर्ष जारी है। उन्होंने प्रोन्नत वेतनमान, पुरानी पेंशन, जी०आई०एस० तथा ग्रेच्युटी इत्यादि मुद्दों पर जिला स्तर से लेकर प्रदेश स्तर तक संघर्ष का आह्वान किया। जिला महामंत्री भूपेन्द्र प्रताप सिंह ने अपने अधिकारों के लिए सजग रहने का आह्वान किया।

बैठक को राजेश उपाध्याय, लोकेन्द्र सिंह, सत्य राम उपाध्याय, विजेंद्र त्रिपाठी, अलोक यादव, महेंद्र शुक्ला, लवकुश शुक्ला, आलोक यादव, इत्यादि ने सम्बोधित करते हुए शिक्षकों और शिक्षणेत्तर कर्मचारियों से सम्बन्धित समस्याओं को रखा। संचालन डा० विजय सिंह ने किया।

बैठक में मुख्य रूप से सर्वेश पाण्डेय, राहुल सिंह, अखिलेश सिंह, , हेमन्त पुष्कर चौधरी, रवि गौतम, रमेश सिंह, रितेश श्रीवास्तव, विपिन सिंह, आलोक सिंह, मुकेश सिंह नेबूलाल यादव, राकेश कुमार, विपिन सिंह आदि उपस्थित रहे।

–पुरानी पेंशन हमारा हक और बुढ़ापे का सहारा–श्रवण कुमार सिंह

"मुझे अखबार निकालने दो तो मै इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"—वेंडेल फिलिप्स

दैनिक भारतीय बस्ती

बस्ती 25 सितम्बर 2026 शुक्रवार

सम्पादकीय

सवालों के घेरे में निर्वाचन आयोग

विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के दौरान भारत निर्वाचन आयोग (ईसीआई) के कामकाज के बारे में 'द इंडियन एक्सप्रेस' की छानबीन यह दिखाती है कि मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार की देखरेख में जो घटित हुआ, उसे लेकर बेचौनी सिविल सोसाइटी, मीडिया और विपक्ष तक ही सीमित नहीं है। खुद आयोग भी इस बेचौनी से गुजर रहा था। निर्वाचन आयुक्तों सुखबीर सिंह संधू और विवेक जोशी ने विभिन्न निर्णयों पर अक्टूबर 2025 और अगस्त 2026 के बीच कम—से—कम 14 बार ऑन रिकॉर्ड आपत्ति दर्ज की। उन्होंने कहा कि कई निर्णय तो उनकी जानकारी के बगैर लिये गये। उनकी असहमति ठीक वही है जो कई लोग लंबे समय से एसआईआर के बारे में कहते आ रहे हैं। मई में, श्री जोशी ने आगाह किया था कि नये मतदाताओं के लिए आवेदन यानी फॉर्म 6 को सरकार द्वारा नियमों में संशोधन के बगैर बदला नहीं जा सकता। फिर भी, जुलाई में, फॉर्म में इस बारे में सवाल शामिल थे कि क्या आवेदक या उसके माता—पिता या दादा—दादी, नाना—नानी "पिछले एसआईआर की मतदाता सूची" में मौजूद थे जिसे श्री संधू ने "अनधिकृत और अवैध" कहा। निर्वाचन आयुक्तों ने मतदाता सूची डेटाबेस के केंद्रीकरण पर चिंता जतायी, पड़ताल की मांग की और यह दर्ज किया कि फील्ड अधिकारियों की 'ईआरओनेट' पोर्टल तक पूरी पहुंच नहीं थी। यह ठीक वही है जिसकी शिकायत स्थानीय चुनाव अधिकारियों ने की थी। उनकी शिकायत थी कि मतदाताओं की पात्रता के मामले में वैधानिक प्राधिकारी चुनाव पंजीकरण अधिकारी हैं, जिनके अधिकारों को गौण करके सूचियों में कई सारे बदलाव केंद्रीय डेटाबेस स्तर पर किये गये।

निर्वाचन आयोग के निर्णय लेने और उसके कामकाज में असंगतियों के खामियाजे पश्चिम बंगाल में सबसे गहरे थे। लगभग 60 लाख मतदाता सॉफ्टवेयर—जनित "तार्किक विसंगतियों" बहुतेरी संदिग्ध — के लिए चिह्नित किये गये और 27 लाख नाम हटाये गये। ट्रिब्यूनल के समक्ष लंबित 38 लाख अपीलों में से 16.1 लाख उनके द्वारा दायर की गयीं जो न्यायिक अधिकारियों द्वारा सूची में शामिल किये गये मतदाताओं के नाम हटवाना चाहते थेय श्री संधू का यह सवाल कि आयोग की ओर से इन्हें दायर करने की मंजूरी किसने दी, अब भी अनुत्तरित है। इस दरम्यान, नाम हटाने के खिलाफ अब तक निर्णीत हर 10 अपीलों में नौ से ज्यादा ऐसी हैं जिन्होंने मतदाताओं के नाम वापस जोड़े हैं। यह बताता है कि पश्चिम बंगाल चुनाव से पहले इस कवायद ने लाखों असली मतदाताओं के नाम काटे। 'द हिंदू' के एक विश्लेषण ने यह भी उजागर किया कि दिल्ली में 70 सीटों में से 24 की मसौदा सूचियों में अब उससे भी कम मतदाता हैं जितनों ने महज डेढ़ साल पहले वास्तव में वोट डाला था। बुधवार को, न्यायमूर्ति दीपंकर दत्त ने, दो जजों की बेंच के हिस्से के तौर पर, अपनी राय में कहा कि साल 2023 के अधिनियम द्वारा चयन पैनल में सीजेआई (जिन्हें अनूप बर्नवाल फैसले ने इस पैनल में रखा था) की जगह एक केंद्रीय मंत्री को लाना "धारणा की कसौटी" पर खरा नहीं उतरता। इसी पैनल ने श्री कुमार को सीईसी चुना। अफसोस की बात है कि सुप्रीम कोर्ट ने एसआईआर के डिजाइन पर दृ जो नाम पहले हटाता है, सत्यापन बाद में करता है, पात्रता साबित करने का बोझ राज्य के बजाय नागरिक पर डालता है, और इस तरह सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार की संवैधानिक गारंटी को नाकाम करता है — पर्याप्त रूप से गौर किये बिना इसे पहले सही ठहराया था। श्री कुमार को इस्तीफा देना चाहिए और सूचियों के डेटाबेस का ऑडिट होने तक सुप्रीम कोर्ट को और नाम हटाने पर रोक लगा देनी चाहिए। इससे कम कुछ भी भारत के लोकतंत्र की नाकामी होगी।

जिन्दगी से खिलवाड़ करती नकली दवायें

बेंगलुरु में नकली दवाओं के रैकेट के हालिया भंडाफोड़ से एक बड़ी काली करतूत सामने आई है। बेंगलुरु को केंद्र करके, राज्य के 90 से ज्यादा अस्पतालों व क्लीनिकों में दोबारा लेबल लगायी गयी या नकली दवाओं की आपूर्ति की गयी, जिनमें कैंसर की दवाएं और आईसीयू में इस्तेमाल होने वाले इंजेक्शन शामिल हैं। इस बड़े घपले का पर्दाफाश 18 अगस्त को कर्नाटक में बिड़दी के पास संयोगवश हुई छापेमारी के बाद हुआ। छापे में एक फार्महाउस से, जो बिना लाइसेंस की यूनिट थी, संदेहास्पद नकली दवाएं और एक्सपायर दवाएं मिलीं। इस पूरी खेप का अंकित मूल्य पांच करोड़ रुपये था। जांचकर्ताओं ने यह भी बताया कि फार्महाउस का इस्तेमाल नकली दवाएं बनाने के लिए किया जाता था। वहां नकली और एक्सपायर दवाओं की रीपैकेजिंग नयी एक्सपायरी डेट के साथ ताजा खेप के रूप में, और महंगी व आयातित ब्रांडेड दवाओं के रूप में की जाती थी, फिर उन्हें भारी छूट पर बेचा जाता था। राज्य ने बाद में एक विशेष जांच दल (एसआईटी) का गठन किया ताकि व्यापक नेटवर्क का पता लगाया जा सके। वितरण तंत्र की खोज—बीन करते हुए, जांचकर्ताओं ने पाया कि बेंगलुरु में एक फार्मेसी से सांठ—गांठ करके यह नेटवर्क राज्य में 90 से ज्यादा अस्पतालों में दवाओं की आपूर्ति कर रहा था, जो इस बात का संकेत है कि भंडाफोड़ से पहले यह खूब फल—फूल रहा था। कुछ लोगों को गिरफ्तार किया गया है और पुलिस एक अन्य व्यक्ति की तलाश में है जो अभी देश में मौजूद नहीं है। जिस धड़ल्ले से घपलेबाज काम कर रहे थे वह इस बात का निश्चित सूचक है कि बाजार में दवाओं की गुणवत्ता की जांच—परख गैर—भरोसेमंद है। बहरहाल, सबसे बड़ी चिंता मरीजों की सुरक्षा होनी चाहिए, क्योंकि ये ऐसी दवाएं हैं जो जान बचा सकती हैं और तय मियाद के भीतर इस्तेमाल करने के लिए होती हैं। जांचकर्ता आपूर्ति श्रृंखला (सप्लाई चेन) की पूर्ण समीक्षा कर रहे हैं और अंतर—राज्यीय कड़ियां जुड़ी होने की संभावना को भी जांचा जा रहा है। किन कुचक्रों के चलते निजी अस्पतालों ने ये दवाएं खरीदीं और इस्तेमाल कीं, इसकी छानबीन की जा रही है। इसमें निजी अस्पताल नेटवर्क में मिलीभगत के कोण की जांच भी शामिल है।

भारत में खराब गुणवत्ता वाली, अवैध, नकली या एक्सपायर दवाओं से जुड़े मामले हैरतअंगेज नियमितता के साथ सुर्खियों में आते हैं। एक ऐसा देश जो बहुत उत्साह से 'दुनिया की फार्मेसी' बनने की इच्छा रखता है, वह अपनी इस महत्वाकांक्षा के अनुरूप पर्याप्त व सख्त निगरानी करने और गुणवत्ता नियंत्रण प्रणालियां स्थापित करने के लिए जूझ रहा है। दवाओं के मामले में गुणवत्ता का सवाल खास तौर पर महत्वपूर्ण है क्योंकि नकली या अवैध दवाओं से तुरंत विपरीत प्रतिक्रियाएं हो सकती हैं, जो गंभीर अपंगता, और यहां तक कि मौत का कारण बन सकती हैं। संदूषित कफ सिरप से न सिर्फ भारत में, बल्कि दुनिया भर में हुई मौतों की हालिया घटनाओं ने इन बेहद अपर्याप्त प्रणालियों को और उजागर किया है और "मेक इन इंडिया" के प्रति भारतीय गौरव को बार—बार ठेस पहुंचाई है। चाहे भारत दुनिया की फार्मेसी बने या न बने, यह पक्का करना फौरन जरूरी है कि देश में बनी दवाएं और मेडिकल सप्लाई सबसे ऊंचे गुणवत्ता मानकों को पूरा करें।

राजनीति में मिमिक्री वार—प्रतिवार का अस्त्र न बने

—विश्वनाथ सचदेव—

राजनीति की दृष्टि से इस मिमिक्री—प्रकरण का भले ही कुछ भी अर्थ हो, पर इसका एक सीधा—सा अर्थ यह भी है कि मिमिक्री ने हमारी राजनीति को एक घटियापन से जोड़ दिया है। वैसे भी राजनीति को 'शैतानों की अंतिम शरणस्थली' कहा गया है, पर राजनीतिक विरोधियों पर इस तरह के घटिया प्रहार हमारी राजनीति के ओछेपन को ही उजागर करते हैं। राजनीति की दुनिया की एक विवशता या विशेषता यह है कि उसमें किसी को अपना कहादृकिया कभी गलत नहीं लगता, और यदि यही सब विरोधी करे तो वह कभी सही नहीं माना जाता। इसका ताजा उदाहरण हाल ही में इंदौर में दिखा जब लोकसभा में विपक्ष के नेता द्वारा चलाये जा रहे अभियान 'छात्रों की गूंज' में एक मसखरे को मंच पर बुलाया गया। मसखरा शब्द में कुछ हल्कापन सुनाई देता है, शायद इसीलिए आज की पीढ़ी इसे अंग्रेजी में 'स्टेण्ड अप कॉमेडियन' कहना पसंद करती है। नेता विपक्ष के उस कार्यक्रम में पता नहीं क्या सोचकर एक कामेडियन को सम्मिलित करना जरूरी समझा गया था, पर जो हुआ उसे देखकर अच्छा तो नहीं लगा। राजनेताओं की मिमिक्री अथवा नकल उतारना एक स्वाभाविक—सी बात मानी जाती है। इस मिमिक्री को देखने—सुनने वाले अक्सर इस पर हंस लेते हैं, और बात वहीं समाप्त हो जाती है। यह सही है कि राजनीति में मिमिक्री का उपयोग सिर्फ हंसने—हंसाने के लिए नहीं होता। उद्देश्य अपने विरोधी को नीचा दिखाना ही होता है, इसलिए जिसका मजाक उड़ाया जाता है, वह, और उसके समर्थक उसे सही नहीं मानते और मजाक उड़ाने वालों को वह कभी गलत नहीं लगता। इसीलिए जब इंदौर में राहुल गांधी की सभा में एक मसखरे को मंच पर बुलाकर प्रधानमंत्री की मिमिक्री करायी गयी तो इसे पसंद—नापसंद करने वाले साफ—साफ बंटे हुए दिखाई दे रहे हैं।

होना तो यह चाहिए था कि मिमिक्री के इस प्रकरण को हंस कर भुला दिया जाता, पर मामला राजनीतिक नफे—नुकसान का है, इसलिए बात बढ़ गयी है। भाजपा वालों को यह लग रहा है कि प्रधानमंत्री की छवि को खराब करने के लिए विपक्ष ने यह 'घटिया' चाल चली है, और कांग्रेस के समर्थक इसे अपना 'मास्टर स्ट्रोक' मान रहे हैं। हकीकत यह भी है कि दोनों पक्षों में एक होड़—सी लगी है एक—दूसरे को नीचा दिखाने की। राजनीति की दृष्टि से इस मिमिक्री—प्रकरण का भले ही कुछ भी अर्थ हो, पर इसका एक सीधा—सा अर्थ यह भी है कि मिमिक्री ने हमारी राजनीति को एक घटियापन से जोड़ दिया है। वैसे भी राजनीति को 'शैतानों की अंतिम शरणस्थली' कहा गया है, पर राजनीतिक विरोधियों पर इस तरह के घटिया प्रहार हमारी राजनीति के ओछेपन को ही उजागर करते हैं।

एक—दूसरे का मजाक उड़ाना हमेशा गलत नहीं होता, पर जिस तरह के वार—प्रतिवार हमारी राजनीति में दिखने लगे हैं, उनके घटियापन को किसी भी तरह के बचाव से छिपाया नहीं जा सकता। इस संदर्भ में हमारे छुटभैया राजनेताओं से लेकर बड़े से बड़े राजनेता का दामन भी मैला दिखाई देता है। इंदौर के 'छात्रों की गूंज' के कार्यक्रम में मसखरे को मंच पर बुलाकर इस मैलेपन को ही उजागर किया गया है।

बहरहाल, राहुल गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी का यह 'छात्रों की गूंज' वाला अभियान अभी जड़ें पकड़ता नजर आ रहा है। इंदौर का यह कार्यक्रम पांचवां था। भाजपा वाले भले ही इसे 'झूठ की गूंज' कहकर इसका महत्व कम करने की कोशिश करते दिखाई दें, पर जिस तरह युवा इस कार्यक्रम से जुड़ रहे हैं, वह यह अवश्य बताता है कि हमारी जेन—जी वाली पीढ़ी इस अभियान में अपनी आवाज खोज रही है। देश का आज का युवा हमारी राजनीति को आकार देने में अपनी सक्रिय और सार्थक भूमिका खोज ही नहीं रहा, निभा भी रहा है।

यह एक गंभीर प्रयास है और कांग्रेस पार्टी को उसे इसी रूप में देखना—समझना चाहिए। मिमिक्री जैसी कोशिशें तालियां तो बजवा सकती हैं, जैसा कि इंदौर वाले कार्यक्रम में हुआ, पर यह बात अपने आप में कम महत्वपूर्ण नहीं है कि इसी मिमिक्री के चलते वह सब कहीं खो गया जो राहुल गांधी ने कहा, अथवा कहना चाह रहे थे। सवाल सिर्फ एक राहुल गांधी का नहीं है, जब भी जिस नेता ने ऐसी कोशिश की है, उसे तालियां तो मिली हैं, कभी—कभी लोगों ने ऐसी बातों को याद भी रखा है, पर अपनी बात श्रोताओं तक पहुंचाने का नेता का प्रयास कहीं न कहीं असफल ही हुआ है।

राहुल गांधी इस गूंज वाले कार्यक्रम में बहुत गंभीरता के साथ युवाओं से जुड़े मुद्दे उठा रहे हैं। शिक्षा, बेरोजगारी जैसे गंभीर विषयों के माध्यम से वे देश की युवा—शक्ति को अपने साथ जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। इस अभियान के अब तक के परिणाम बता रहे हैं कि युवा इन प्रयासों में अपने सुखद भविष्य की आहट सुन रहे हैं। ऐसे में यदि विरोधियों की मिमिक्री से युवाओं का ध्यान बंटता है तो यह एक चिंतनीय विषय होना चाहिए। विदेशी नेताओं से प्रधानमंत्री कैसे मिलते हैं, यह हल्के—फुल्के मजाक का विषय तो हो सकता है, पर यदि कोई इसके सहारे राजनीतिक लाभ उठाने की कोशिश करता है तो उसे नासमझी ही कहा जायेगा।

फिर, यह भी नहीं भुलाया जाना चाहिए कि भाजपा का नेतृत्व, हमारे प्रधानमंत्रीजी भी, ऐसी नासमझियों का लाभ उठाना अच्छी तरह जानते हैं। इंदौर वाली इस सभा में मिमिक्री करने वाले ने प्रधानमंत्री द्वारा एक महिला को कुर्सी दिये जाने की बात का हवाला देते हुए सिर्फ इतना ही कहा था कि 'माताजी को कुर्सी दीजिए'। इस बात को जिस मजाकिया अंदाज में दोहराया गया, उसे कांग्रेस—विरोधियों ने तत्काल लपक लिया और बड़े पैमाने पर यह प्रचार किया जा रहा है कि उस मंच से प्रधानमंत्री की माताजी का अपमान किया गया। अब स्थिति यह बन गयी है कि उस सभा में राहुल गांधी ने शिक्षा, बेरोजगारी और स्वास्थ्य आदि गंभीर मुद्दों पर जो कुछ महत्वपूर्ण कहा, वह तो जैसे भुला दिया गया है, और एक मसखरे का कथन हवा में गूंज रहा है! ऐसी स्थिति का बनना राजनीतिक नासमझी का ही एक उदाहरण माना जाना जायेगा।

यह विडम्बना ही है कि विपक्ष द्वारा उठाये जा रहे गंभीर मुद्दों पर अपनी बात रखने के बजाय भाजपा के नेता मिमिक्री को कार्यक्रम का हिस्सा बनाने पर सवालिया निशान लगा रहे हैं। यह मौका उन्हें मिला नहीं, दिया गया है, और वोट की राजनीति में इस तरह के मौके देना किसी 'सेल्फ गोल' से कम नहीं होता। भाजपा के एक वरिष्ठ नेता ने भी कहा है कि 'राहुल गांधी कब इस बात पर गौर करेंगे कि मिमिक्री मनोरंजन तो दे सकती है, लेकिन अगर देश को आगे बढ़ना है और हमें छात्रों के आगे बढ़ने के बारे में बात करनी है तो नीति, कड़ी मेहनत और अवसरों पर चर्चा होनी चाहिए।' यह 'छात्रों की गूंज' कार्यक्रम के बारे में किसी एक व्यक्ति की टिप्पणी मात्र नहीं है, इस आशय की प्रतिक्रियाएं लगातार सामने आ रही हैं। हमने देखा है कि क्रिकेट के मैच में कोई एक चूक, सारे खेल का पासा पलट देती है। कुछ वैसा ही राजनीति में भी होता है। कोई एक बात, कोई एक वाक्य, कोई एक गलत दांव चुनाव के परिणाम को पलटने की क्षमता रखता है। हमारे राजनेताओं को, और राजनीतिक दलों को इस बात को समझना होगाकृखास तौर पर कांग्रेस को जो पहले भी कई बार अपनी किसी एक चूक का शिकार हो चुकी है।

जहां तक मिमिक्री का सवाल है, उसे भी एक सकारात्मक दृष्टि से देखे जाने की आवश्यकता है। मिमिक्री कुछ—कुछ कार्टून जैसी होती है। कार्टून कुछ रेखाओं के माध्यम से बहुत कुछ कहने की कला का नाम है और मिमिक्री कुछ शब्दों के माध्यम से किसी की चूक की ओर इशारा करने का। दोनों की प्रकृति एक जैसी ही है। रेखाओं और शब्दों की ताकत की अवहेलना नहीं होनी चाहिए, और न ही इनका दुरुपयोग होना चाहिए। दोनों ही स्थितियों में शालीनता की अपेक्षा की जाती है। कार्टूनिस्ट शंकर से पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने कहा था, 'शंकर, मुझे भी मत बख्शना'। यह छोटी—सी घटना बड़ी बात बताती है। और वह बड़ी बात यह है कि आलोचना या टिप्पणी चाहे कैसी भी हो, मर्यादा में होनी चाहिए। जीवन में मजाक का अपना स्थान है। जब कोई प्रधानमंत्री किसी कार्टूनिस्ट से यह कहता है कि वह उसे भी अपनी टिप्पणी का शिकार बना सकता है तो इसके पीछे यह भाव भी है कि वह कार्टून बनाने वाले की ईमानदारी में विश्वास करता है। राजनीति में भी ऐसी ही पारस्परिक ईमानदारी की आवश्यकता है। परस्पर सम्मान की भी। बशीर बद्र ने कहा थाकृ'दुश्मनी जम कर करो, लेकिन यह गुंजाइश रहेध् फिर कभी हम दोस्त बन जाएं तो शर्मिंदा न हों।' यह बात हम सब पर लागू होती है।

—लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

आईआईटी बाम्बे के छात्र आत्महत्या से जुड़े प्रश्न

— ललित गर्ग—

आईआईटी बॉम्बे के द्वितीय वर्ष के बीटेक छात्र साहिल वाकोडे की 18 सितंबर 2026 को हुई मृत्यु ने देश के उच्च शिक्षण संस्थानों की कार्यप्रणाली, विद्यार्थियों पर बढ़ते शैक्षणिक दबाव, परीक्षा में बढ़ती अनैतिकता, शिक्षकों की जवाबदेही, मानसिक स्वास्थ्य और परिसरों में राजनीतिक हस्तक्षेप जैसे अनेक गंभीर प्रश्न एक साथ खड़े कर दिए हैं। इस घटना को फिलहाल आत्महत्या के रूप में रिपोर्ट किया गया है, इसके पीछे की परिस्थितियों और किसी व्यक्ति की आपराधिक जिम्मेदारी का निर्धारण जांच का विषय है। मुंबई पुलिस ने मामले में एफआईआर दर्ज की है और जांच आगे बढ़ाई जा रही है। इसलिए किसी व्यक्ति को घटना के लिए दोषी ठहराना जांच पूरी होने से पहले उचित नहीं होगा। घटना से पहले परीक्षा के दौरान साहिल के मोबाइल और कथित रूप से एआई चौटजीपीटी के इस्तेमाल को लेकर संस्थागत कार्रवाई की स्थिति बनी थी। इसके बाद छात्रों में यह धारणा पैदा हुई कि मामले को जिस तरीके से संभाला गया, उसमें पर्याप्त संवेदनशीलता नहीं थी। संस्थान ने बाद में अपने पूर्व सार्वजनिक बयान के लिए माफी मांगते हुए स्वीकार किया कि जांच पूरी होने से पहले घटना से जुड़े विवरण सार्वजनिक करना उचित नहीं था। संबंधित प्रोफेसर को डीन के प्रशासनिक पद से हटाया गया है, जबकि उनके विरुद्ध दर्ज मामले में अंतिम निष्कर्ष अभी जांच और न्यायिक प्रक्रिया पर निर्भर करेगा।

इस घटना के बाद तीन दिनों तक छात्रों का विरोध प्रदर्शन हुआ और 18 सूत्रीय मांगपत्र सामने आया। इन मांगों में स्वतंत्र जांच, शिक्षकों के विरुद्ध शिकायतों की स्पष्ट प्रक्रिया, छात्र—प्रतिनिधित्व, बेहतर काउंसलिंग, चौबीसों घंटे मनोचिकित्सकीय सहायता, शिक्षकों एवं कर्मचारियों के लिए मानसिक स्वास्थ्य संबंधी प्रशिक्षण और परीक्षा में अनियमितता के मामलों को संभालने के लिए अधिक मानवीय प्रक्रिया जैसी बातें शामिल हैं। आईआईटी बॉम्बे के निदेशक ने छात्रों के साथ बातचीत के बाद इस चार्टर पर हस्ताक्षर किए, हालांकि संस्थान की ओर से यह भी स्पष्ट किया गया कि आगे की कार्रवाई निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार होगी। यहीं से इस पूरे प्रकरण का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष सामने आता है। क्या शिक्षा संस्थान में अनुशासन और मानवीय संवेदना एक—दूसरे के विरोधी हैं? निश्चित रूप से नहीं। परीक्षा में नकल, मोबाइल का अनुचित इस्तेमाल अथवा एआई के माध्यम से अनुचित सहायता लेना शिक्षा की विश्वसनीयता के लिए गंभीर चुनौती है। यदि उच्च शिक्षण संस्थान ऐसी अनैतिकताओं को रोकने में असफल होते हैं तो डिग्री, शोध और प्रतिभा की विश्वसनीयता प्रभावित होती है। लेकिन दूसरी ओर अनुशासनात्मक कार्रवाई ऐसी होनी चाहिए जिसमें आरोप की निष्पक्ष जांच, छात्र को अपनी बात रखने का अवसर, अपील की व्यवस्था और मानसिक स्थिति को समझने की संवेदनशीलता शामिल हो। अपराध या अकादमिक कदाचार को नजरअंदाज करना भी गलत है और किसी छात्र को बिना समुचित प्रक्रिया के सामाजिक रूप से दोषी ठहरा देना भी।

आज एआई ने शिक्षा के सामने एक बिल्कुल नई चुनौती खड़ी कर दी है। चौटजीपीटी जैसे उपकरण ज्ञान प्राप्त करने, शोध करने और सीखने में उपयोगी हो सकते हैं, लेकिन परीक्षा में अनुचित तरीके से इनका इस्तेमाल शैक्षणिक ईमानदारी का प्रश्न बन जाता है। इसलिए केवल प्रतिबंध पर्याप्त नहीं होंगे। विश्वविद्यालयों को यह स्पष्ट करना होगा कि एआई का उपयोग कहां स्वीकार्य है, कहां निषिद्ध है और उल्लंघन की स्थिति में कौन—सी पारदर्शी प्रक्रिया अपनाई जाएगी। शिक्षकों को भी केवल दंड देने वाले अधिकारी की भूमिका से आगे बढ़कर मार्गदर्शक की भूमिका निभानी होगी। साहिल प्रकरण ने जातिगत भेदभाव के आरोपों को भी चर्चा के केंद्र में ला दिया है। परिवार की शिकायत के आधार पर पुलिस ने संबंधित धाराओं में मामला दर्ज किया है, जबकि संस्थान की ओर से यह कहा गया कि छात्र ने पहले एससीध्एसटी सेल या प्रशासन के समक्ष ऐसी शिकायत नहीं की थी। इन दोनों पक्षों में से सत्य क्या है, इसका निर्णय जांच के बाद ही हो सकता है। लेकिन इससे एक व्यापक तथ्य सामने आता है—किसी भी विद्यार्थी को अपनी जाति, आर्थिक स्थिति, भाषा, क्षेत्र या सामाजिक पृष्ठभूमि के कारण स्वयं को अकेला या असुरक्षित महसूस नहीं होना चाहिए।

भारत में उच्च शिक्षा को लेकर नियामकीय ढांचा भी लगातार अधिक जवाबदेही और छात्र—केंद्रित व्यवस्था की ओर बढ़ रहा है। यूजीसी की 2023 की छात्र शिकायत निवारण संबंधी नियमावली के साथ—साथ 2026 में प्रमोशन आफ इक्विटी इन हायर एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन रेगुलेशन भी सूचीबद्ध हैं। इसका मूल उद्देश्य यही होना चाहिए कि विद्यार्थी के अधिकार सुरक्षित रहें, शिकायतों का स्वतंत्र और समयबद्ध निवारण हो तथा संस्थान अपनी जिम्मेदारी से बच न सकें। लेकिन यहां एक सावधानी भी आवश्यक है। कानून का अर्थ यह नहीं हो सकता कि हर दुर्भाग्यपूर्ण घटना के बाद बिना जांच किसी शिक्षक या अधिकारी को अपराधी घोषित कर दिया जाए।

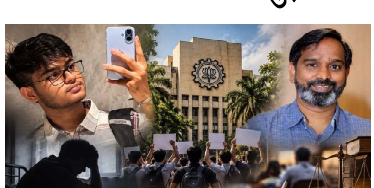

भारत— बांग्लादेश के कूटनीतिक संबंध

—नीरज कुमार दुबे—

भारत और बांग्लादेश के कूटनीतिक संबंध पहले ही खराब दौर से गुजर रहे हैं। ऐसे में बांग्लादेश की तारिक रहमान सरकार ने भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के गृहराज्य गुजरात की हिलसा मछली का आयात रोक कर इस चिंगारी को और भड़का दिया है। हम आपको बता दें कि मंगलवार शाम बांग्लादेश ने भारत से हिलसा मंगाने वाले आयात परमिट रद्द कर दिए। पिछले करीब दो महीनों में बांग्लादेश लगभग 550 टन भारतीय हिलसा मंगा चुका था, लेकिन अब अचानक इस व्यापार पर रोक लगा दी गई है। मामला इसलिए भी गंभीर है क्योंकि यह फैसला ऐसे समय आया है जब बांग्लादेश खुद हिलसा की कमी और बढ़ती कीमतों से जूझ रहा है। यानी जिस भारतीय हिलसा की जरूरत बांग्लादेश के अपने बाजार को पड़ रही थी, उसी पर रोक लगाकर ढाका ने भारत के साथ पहले से तनावपूर्ण चल रहे रिश्तों में एक नया विवाद खड़ा कर दिया है।

देखा जाये तो यह फैसला ऐसे समय आया है जब बांग्लादेश में हिलसा की स्थानीय पकड़ पिछले कुछ वर्षों के मुकाबले कमजोर हुई है और वहां कीमतें तेजी से बढ़ी हैं। बांग्लादेशी मछुआरा महासंघ के अध्यक्ष रवींद्रनाथ बर्मन ने आरोप लगाया कि कुछ व्यापारियों ने भारत की गुजरात वाली हिलसा को बांग्लादेशी हिलसा बताकर बेचने की कोशिश की, जिससे उपभोक्ताओं के साथ धोखा हुआ।

लेकिन असली कहानी इससे कहीं बड़ी है। हिलसा सिर्फ एक मछली नहीं है। बंगाली समाज में इसका स्वाद, परंपरा, धार्मिक रीति और सांस्कृतिक पहचान से गहरा संबंध है। बांग्लादेश इसे अपनी राष्ट्रीय मछली मानता है, जबकि पश्चिम बंगाल में भी पद्मा की हिलसा को विशेष प्रतिष्ठा हासिल है। हम आपको बता दें कि पद्मा गंगा की एक प्रमुख वितरिका है, जो आगे मेघना से मिलकर बंगाल की खाड़ी में जाती है। यही वजह है कि पद्मा और मेघना की हिलसा भारत में महंगी कीमत पर भी खरीदी जाती है।

विडंबना देखिए कि बांग्लादेश लंबे समय से भारत को सीमित मात्रा में हिलसा भेजता रहा है, लेकिन दूसरी तरफ भारत से सैकड़ों टन हिलसा खरीद भी रहा है। पिछले दो महीनों में भारत से करीब 500 टन हिलसा बांग्लादेश पहुंची और अतिरिक्त 150 से 200 टन की प्रक्रिया भी चल रही थी। इनमें बड़ी मात्रा गुजरात के भरूच और नर्मदा क्षेत्र की हिलसा की बताई गई है।

इसका कारण स्वाद से ज्यादा अर्थशास्त्र है। बांग्लादेश में पद्मा और मेघना की अच्छी हिलसा लगभग 2,200 से 2,800 टका प्रति किलो तक पहुंच सकती है, जबकि गुजरात की हिलसा वहां के थोक बाजार में लगभग 500 से 700 टका प्रति किलो की लागत पर पहुंचती है और खुदरा बाजार में करीब 1,500 से 1,800 टका प्रति किलो में बिक सकती है। यानी बांग्लादेश के लिए गुजरात की हिलसा स्थानीय कमी को पूरा करने का अपेक्षाकृत सस्ता माध्यम बन गई है।

यही वह कारण है जहां बांग्लादेश का मौजूदा फैसला सवालों के घेरे में आता है। अगर भारतीय हिलसा वहां की आपूर्ति व्यवस्था, प्रसंस्करण उद्योग और कीमतों को संभालने में उपयोगी है, तो अचानक आयात परमिट रोकने से सबसे सीधा असर वहां के बाजार और उपभोक्ताओं पर पड़ सकता है। दूसरी तरफ भारत में भी इसका असर होगा। पश्चिम बंगाल के व्यापारियों के अनुसार गुजरात में मौजूदा हिलसा की उपलब्धता भी सीमित हो चुकी है और कोलकाता के बाजार में म्यांमार की हिलसा ही एक प्रमुख विकल्प बच सकती है।

भारत के लिए दूसरी बड़ी चुनौती घरेलू उत्पादन की है। पश्चिम बंगाल में हिलसा का उत्पादन वर्ष 2001 के करीब 80 हजार टन से घटकर 2013 में लगभग 15 हजार टन और 2020 में करीब 10 हजार टन रह गया था। इसके पीछे बंगाल की खाड़ी में अत्यधिक मछली पकड़ने को एक प्रमुख कारण बताया गया है। इसी कमी ने गुजरात की हिलसा के लिए बाजार तैयार किया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अनुसार गुजरात ने 2025—26 में करीब 14,588 टन हिलसा का उत्पादन किया। वहीं बांग्लादेश में भी हिलसा का उत्पादन गिरा है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार वार्षिक उत्पादन 2022 के 5,71,324 टन से घटकर 2025 में करीब 5 लाख टन रह गया। इसी दौरान कीमतों में भारी उछाल आया। ऐसे में भारत से आने वाली अपेक्षाकृत सस्ती हिलसा की भूमिका और महत्वपूर्ण हो जाती है।

मगर सबसे बड़ा खतरा उपभोक्ता भरोसे का है। पश्चिम बंगाल और दिल्ली जैसे बाजारों में गुजरात और गंगा की हिलसा में अंतर करना कई खरीदारों के लिए आसान नहीं है। कुछ व्यापारियों ने खुद माना कि खरीदार को यह पता लगाना कठिन हो सकता है कि मछली वास्तव में कहां की है। ऐसे में गलत नाम से बिक्री का आरोप सिर्फ व्यापारिक विवाद नहीं, बल्कि खाद्य पारदर्शिता का मुद्दा भी बन जाता है।

इस पूरे घटनाक्रम का व्यापक निहितार्थ साफ है। हिलसा अब सिर्फ स्वाद और परंपरा का विषय नहीं रही। यह सीमा—पार व्यापार, कीमत, स्थानीय उत्पादन, उपभोक्ता विश्वास और दोनों देशों के बाजारों की परस्पर निर्भरता का प्रतीक बन चुकी है। बांग्लादेश भारत से हिलसा खरीदकर अपनी कमी पूरी करता है, जबकि भारत में बंगाली उपभोक्ता बांग्लादेशी पद्मा हिलसा के लिए तरसते हैं।

पूर्व मंत्री ने दुखी परिवारों से की मुलाकात, इंदल भारती के परिजनों को दी आर्थिक मदद

संवाददाता–महराजगंज। समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता और उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व मंत्री सुशील टिबड़ेवाल ने क्षेत्र के दुखी परिवारों से मुलाकात कर संवेदना जताई। उन्होंने दिवंगत इंदल भारती के परिजनों को आर्थिक सहायता दी और हरसंभव मदद का भरोसा दिलाया।

इसके साथ ही, अरुण राजभर के परिजनों और सपा के वरिष्ठ जिला उपाध्यक्ष महातम यादव की पत्नी के निधन पर उनके परिवार से मिलकर दुख साझा किया। पूर्व मंत्री सुशील टिबड़ेवाल सबसे पहले सिसवा विधानसभा क्षेत्र 317 के कोहड़वाल गांव के टोला सिसवाडीह निवासी दिवंगत इंदल भारती के परिजनों से मिले। इंदल भारती की कुछ दिन पहले घर में फंदा लगाने से मौत हो गई थी। इस घटना के बाद परिवार में शोक का माहौल है। पूर्व मंत्री ने परिवार से मुलाकात कर घटना पर दुख जताया और परिजनों को हिम्मत बंधाई। इस दौरान उन्होंने परिवार को आर्थिक सहायता दी और भरोसा दिलाया कि दुख की इस घड़ी में वह उनके साथ खड़े हैं।

उन्होंने परिवार की स्थिति की जानकारी ली और जरूरत पड़ने पर हरसंभव सहयोग करने का आश्वासन दिया। पूर्व मंत्री ने दिवंगत आत्मा की शांति और परिवार को दुख सहने की शक्ति मिलने की कामना की। इसी क्रम में, कोहड़वाल गांव के सिसवाडीह टोले में अरुण राजभर के निधन की जानकारी मिलने पर पूर्व मंत्री सुशील टिबड़ेवाल उनके परिजनों से मिलने पहुंचे।

जानकारी के अनुसार, अरुण राजभर का शव उनके घर से कुछ दूरी पर संदिग्ध हालत में मिला था। पूर्व मंत्री ने परिवार के सदस्यों से मुलाकात कर निधन पर दुख जताया और दुखी परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त की। उन्होंने परिवार को इस कठिन समय में हिम्मत बनाए रखने का भरोसा दिलाया और दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की।

पूर्व मंत्री सुशील टिबड़ेवाल ने पिपरा गांव में समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ जिला उपाध्यक्ष महातम यादव की पत्नी के निधन पर उनके आवास पर पहुंचकर शोक संवेदना व्यक्त की। उन्होंने दुखी परिवार से मुलाकात कर दुख साझा किया और परिवार को इस कठिन समय में हिम्मत मिलने की कामना की।

रुक–रुककर बारिश, तापमान गिरा

संवाददाता–देवरिया। गुरुवार सुबह से मौसम बदल गया है। सुबह करीब 9 बजे से कई इलाकों में रुक–रुककर बारिश हो रही है। हल्की हवाओं के साथ बारिश के कारण तापमान में गिरावट आई है। इससे पिछले कई दिनों से उमस भरी गर्मी से लोगों को राहत मिली है। मौसम विभाग के अनुसार, सुबह से दोपहर दो बजे तक पांच घंटे में जिले में 7 एमएम बारिश रिकॉर्ड की गई। सुबह 9 बजे तापमान करीब 26 डिग्री सेल्सियस रहा, जबकि सामान्य दिनों में इस समय तापमान करीब 30 डिग्री के आसपास रहता है। गुरुवार को अधिकतम तापमान 26 डिग्री और न्यूनतम 23 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की संभावना है। इस बारिश से खेतों में खड़ी धान और गन्ने की फसल को फायदा होने की उम्मीद है। किसानों का कहना है कि इस समय की बारिश फसलों के लिए फायदेमंद है।

स्कूटी और मानदेय को लेकर आशा कार्यकर्ताओं ने एडीएम को सौंपा ज्ञापन

संवाददाता–बलरामपुर। स्वास्थ्य सेवाओं का महत्वपूर्ण हिस्सा रही आशा कार्यकर्ताओं ने अपनी मांगों को लेकर प्रदर्शन किया। जिले की आशा कार्यकर्ताओं ने गुरुवार दोपहर 1 बजे कलेक्ट्रेट पहुंचकर एडीएम को मुख्यमंत्री के नाम 10 सूत्रीय ज्ञापन सौंपा। उन्होंने अपनी मांगों पर विचार करने और उन्हें शासन स्तर तक पहुंचाने का अनुरोध किया। आशा कार्यकर्ताओं का कहना है कि वे कई सालों से स्वास्थ्य विभाग की योजनाओं में काम कर रही हैं। लेकिन उन्हें सही मानदेय और सुविधाएं नहीं मिल पा रही हैं। ज्ञापन में आशाओं को राज्य कर्मचारी का दर्जा देने और हर महीने 26 हजार मानदेय तय करने की मुख्य मांग की गई। आशा कार्यकर्ताओं ने आने–जाने और फील्ड के काम के लिए इलेक्ट्रॉनिक स्कूटी देने की मांग भी की। इसके साथ ही दुर्घटना होने पर कम से कम 10 लाख का बीमा और बीमा प्रमाणपत्र देने की भी मांग रखी गई। किसी आशा कार्यकर्ता की मृत्यु होने पर उसके परिवार की एक महिला सदस्य को नौकरी देने की मांग भी ज्ञापन में शामिल है। ज्ञापन में आशा कार्यकर्ताओं और उनके परिवार के सदस्यों के आयुष्मान कार्ड बनवाने की मांग भी की गई। साथ ही आशाओं को मोबाइल फोन देने की भी मांग रखी गई। कार्यकर्ताओं ने बताया कि अभी कई आशाओं को अलग–अलग मदों में करीब 3 हजार, 4 हजार या 5 हजार रुपए तक का भुगतान मिल रहा है। इससे परिवार चलाना, बच्चों की पढ़ाई और दूसरे जरूरी खर्च पूरे करना मुश्किल हो रहा है। आशाओं ने आयुष्मान कार्ड बनवाने, आभा आईडी, दस्तक संचारी अभियान और सी–बैक फॉर्म फीडिंग जैसे कई कामों का भुगतान नहीं होने की बात भी उठाई। उनका कहना है कि लंबे समय से सेवा देने के बाद भी उन्हें सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा नहीं मिल पाई है। ज्ञापन में यह भी बताया गया कि सरकार की ओर से पहले दिए गए मोबाइल फोन खराब हो चुके हैं। सिम का बैलेंस बंद होने से ऑनलाइन फीडिंग और विभागीय कामों में परेशानी हो रही है। आशा कार्यकर्ताओं ने मोबाइल सुविधा और सिम की व्यवस्था ठीक करने की मांग की।

फसल की सिंचाई के दौरान करंट से ग्राम प्रधान की मौत

संवाददाता–देवरिया। बनकटा थाना क्षेत्र के अहिरौली बघेल में गुरुवार को खेत में फसल की सिंचाई के दौरान करंट की चपेट में आने से ग्राम प्रधानः प्रशासक की मौत हो गई। घटना के बाद घर में मातम छा गया। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव पोस्टमार्टम को भेज दिया। अहिरौली बघेल गांव के ग्राम पंचायत प्रशासक रामड़कबाल (50 वर्ष) गुरुवार सुबह खेत में सिंचाई के लिए मोटर चला रहे थे। इसी दौरान मोटर से जुड़े बिजली के तार की चपेट में आने से उन्हें जोरदार करंट लग गया और वह खेत में ही गिर पड़े। काफी देर तक घर वापस नहीं लौटने पर परिजन उनकी तलाश में जुटे। काफी खोजबीन के बाद जब परिजन खेत में गए तो देखे कि वह करंट की चपेट में आकर खेत में ही अचेत पड़े हैं। यह देख लोग तत्काल उन्हें अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां चिकित्सक ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। मौत की सूचना मिलते ही गांव में मातम छा गया। थानाध्यक्ष डीके मौर्य ने बताया कि करंट की चपेट में आने से प्रधान की मौत हुई है। शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है।

पांच साल से मानदेय नहीं बढ़ा, अब आंदोलन की राह पर तकनीकी सहायक

संवाददाता–महराजगंज। पांच साल से मानदेय में बढ़ोतरी नहीं होने से मनरेगा तकनीकी सहायकों में नाराजगी बढ़ रही है। क्षेत्र भ्रमण में हर माह करीब छह हजार रुपये पेट्रोल पर खर्च होने का हवाला देते हुए मनरेगा तकनीकी सहायक एसोसिएशन ने गुरुवार को मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन प्रशासनिक अधिकारी को सौंपा। इसमें 26 सितंबर तक मांगों का निस्तारण कराने की मांग उठाई। समाधान नहीं होने पर 28 सितंबर से लखनऊ के ईको गार्डन में धरना–प्रदर्शन शुरू करने की चेतावनी दी गई है। जिलाध्यक्ष राम प्रताप यादव ने कहा तकनीकी सहायकों को ग्राम पंचायतों में मनरेगा के कार्यों का नियमित स्थलीय निरीक्षण करने के साथ प्राक्कलन तैयार करने और अन्य तकनीकी जिम्मेदारियां निभानी पड़ती हैं।

इसके लिए लगातार क्षेत्र में भ्रमण करना होता है, जिस पर औसतन छह हजार रुपये प्रतिमाह ईंधन खर्च हो जाता है। इसके बावजूद पांच वर्षों से मानदेय में कोई वृद्धि नहीं की गई है। तकनीकी सहायकों ने कहा कि मनरेगा व विकसित भारत–गारंटी रोजगार व आजीविका मिशन (ग्रामीण) के कार्यों में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। गांवों में रोजगार उपलब्ध कराने के साथ स्थायी परिसंपत्तियों के निर्माण में भी वे तकनीकी जिम्मेदारी संभालते हैं। एसोसिएशन ने जूनियर इंजीनियर के न्यूनतम वेतनमान के अनुरूप 45 हजार रुपये प्रतिमाह मानदेय व अलग से यात्रा भत्ता देने की मांग की। इस दौरान आत्माराम दूबे, निहाल श्रीवास्तव, रवि पासवान, राम वृक्ष साहनी, पंकज द्विवेदी, विजय यादव, अजय कुमार, संजय कुमार, रघुनाथ, अनिल दूबे आदि मौजूद रहे।

एसएसबी जवानों ने गणेश पूजा का समापन किया, हवन पूजन के साथ परिवार की सुख-समृद्धि की कामना

संवाददाता–श्रावस्ती। भारत–नेपाल सीमा पर तैनात सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) के जवानों ने मिनगा स्थित वाहिनी परिसर में गणेश उत्सव की शुरुआत की थी। इसके बाद वैदिक मंत्रों के साथ प्रतिमा स्थापित कर 10 दिनों तक विधि–विधान से पूजा की गई। इस कार्यक्रम में जवानों के साथ उनके परिवार और बच्चे भी शामिल हुए ।जवानों ने गुरुवार शाम 4 बजे बताया कि हवन पूजन के साथ गणेश पूजा का समापन हुआ। इस दौरान जवानों ने अपने परिवार की सुख–समृद्धि की कामना की। सीमा पर तैनात जवानों ने अपनी ड्यूटी के साथ–साथ धार्मिक परंपराओं को भी पूरे उत्साह से निभाया। जवानों और बच्चों ने गणपति बप्पा के जयकारे लगाए और झांकी में हिस्सा लिया। पूजा के बाद वाहिनी परिसर में भंडारा हुआ। इसमें वाहिनी के अधिकारी, अधीनस्थ अधिकारी, जवान, संदीक्षा सदस्य और उनके बच्चों ने प्रसाद खाया। इस आयोजन से वाहिनी परिवार में आपसी मेलजोल, भाईचारे और एकता का संदेश भी दिया गया।

कमांडेंट अमरेन्द्र कुमार वरुण ने कहा कि धार्मिक और सांस्कृतिक त्योहार हमारी परंपराओं को जिंदा रखते हैं। साथ ही ये आपसी भाईचारे, एकता और सद्भाव को भी मजबूत करते हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन सीमा पर तैनात जवानों और उनके परिवारों को एक साथ जोड़ने का जरिया भी बनते हैं। दस दिवसीय गणेश उत्सव का समापन 25 सितंबर को गणेश प्रतिमा के विसर्जन के साथ होगा, जिसको लेकर भव्य शोभायात्रा जवानों के द्वारा निकाली जाएगी, इस आयोजन के जरिए वाहिनी परिवार ने सुख, शांति, समृद्धि और सभी के कल्याण की कामना की।

लेखपालों ने 117 अतिरिक्त बस्ते जमा किए, आठ सूत्रीय मांगों पर विरोध तेज, अंतर–मंडलीय स्थानांतरण और 2800 ग्रेड पे की मांग

संवाददाता–बलरामपुर। उत्तर प्रदेश लेखपाल संघ का आठ सूत्रीय मांगों को लेकर विरोध तेज हो गया है। शासन और परिषद स्तर पर कई दौर की बातचीत और आश्वासन के बावजूद मांगें पूरी नहीं होने का आरोप लगाते हुए लेखपालों ने 117 अतिरिक्त लेखपाल क्षेत्रों के बस्ते जमा कर दिए हैं।

संघ ने साफ किया है कि यह अभी सांकेतिक विरोध है। अगर मांगों पर ठोस कार्रवाई नहीं हुई, तो आंदोलन को आगे बढ़ाया जाएगा। इसमें ऑनलाइन कामों का बहिष्कार और फिर कलमबंद हड़ताल भी शामिल होगी। लेखपाल संघ के जिला अध्यक्ष अमित तिवारी ने बताया कि उत्तर प्रदेश लेखपाल संघ लंबे समय से अपनी आठ सूत्रीय मांगों को लेकर कोशिश कर रहा है। परिषद के साथ कई बार बातचीत हुई, लेकिन उनके मुताबिक बातचीत के ब्यौरे पर हस्ताक्षर और आश्वासन के बाद भी मांगों का हल नहीं निकला।

अमित तिवारी के अनुसार, 2 अगस्त 2024 को परिषद और प्रांतीय कार्यकारिणी के बीच बातचीत के ब्यौरे पर हस्ताक्षर हुए थे। इसमें एक महीने के भीतर मांगों पर दयालुता से विचार कर समाधान का आश्वासन दिया गया था। लेकिन 45 दिन बीतने के बाद भी मांगें पूरी नहीं हुईं, जिसके बाद लेखपालों ने अतिरिक्त बस्ता जमा करने का फैसला किया।

लेखपाल संघ की मुख्य मांगों में अंतर–मंडलीय स्थानांतरण, 2800 ग्रेड पे, लेखपाल पद को टेक्निकल पद घोषित करना, अलग–अलग भत्तों में बढ़ोतरी और रुके हुए परीक्षा परिणाम जारी करना शामिल हैं। संघ के मुताबिक, 2024 बैच के कई लेखपाल साथियों का परीक्षा परिणाम अभी तक घोषित नहीं हुआ है।

जिला अध्यक्ष ने कहा कि लेखपालों से लगातार तकनीकी काम लिए जा रहे हैं, लेकिन उसके हिसाब से संसाधन नहीं मिल रहे हैं। उनका कहना है कि विभागीय काम का दायरा लगातार बढ़ रहा है। ऐसे में रुकी हुई मांगों पर अब साफ आदेश की जरूरत है।

बलरामपुर में कुल 375 लेखपाल क्षेत्र हैं, जबकि अभी 258 लेखपाल ही काम कर रहे हैं। ऐसे में खाली पड़े 117 लेखपाल क्षेत्रों का अतिरिक्त काम अब तक कार्यरत लेखपालों के पास था। संघ के फैसले के बाद इन 117 अतिरिक्त क्षेत्रों के बस्ते जमा कर दिए गए हैं।

लेखपालों के अतिरिक्त बस्ता जमा करने से इन क्षेत्रों में आय, जाति और निवास प्रमाण पत्र सहित राजस्व विभाग से जुड़े विभिन्न कार्य प्रभावित होने की स्थिति बन गई है। लेखपाल संघ ने चेतावनी दी है कि यदि मांगों पर जल्द ठोस निर्णय नहीं हुआ तो आंदोलन का दायरा बढ़ाया जाएगा। संघ के मुताबिक, पहले ऑनलाइन कार्यों का बहिष्कार और इसके बाद कलमबंद हड़ताल की जाएगी। फिलहाल अतिरिक्त बस्ते जमा कर लेखपालों ने शासन और परिषद के सामने अपनी मांगों को लेकर दबाव बढ़ा दिया है।

वेतन बढ़ाने व स्थायी करने की मांग पर एएनएम ने शुरू किया बेमियादी आंदोलन

संवाददाता–महराजगंज। वेतन वृद्धि, स्थायीकरण व स्थानांतरण समेत विभिन्न मांगों को लेकर सदर ब्लॉक की संविदा एएनएम ने सीएमओ कार्यालय पर बेमियादी धरना शुरू कर दिया। एएनएम ने सीएमओ को ज्ञापन सौंपकर मांगों के समाधान के लिए ठोस पहल की मांग की। उन्होंने कहा कि मांगें पूरी होने तक आंदोलन जारी रहेगा। एएनएम ने बताया कि संघ संविदा के आह्वान पर प्रदेश भर में संविदा एएनएम अपनी मांगों को लेकर आंदोलन कर रही हैं। एएनएम रीना पटेल, सत्यभामा राय, प्रतिमा पटेल, पूजा तिवारी ने बताया कि लंबे समय से स्वास्थ्य विभाग में संविदा पर सेवाएं देने के बावजूद उनकी सेवा संबंधी समस्याओं का स्थायी समाधान नहीं हो पाया है।

वेतन वृद्धि व स्थायीकरण की मांग कई बार अधिकारियों के समक्ष रखी गई, लेकिन अपेक्षित कार्रवाई नहीं हुई। स्थानांतरण को लेकर भी उन्होंने अपनी समस्याएं अधिकारियों के सामने कई बार रखी हैं। एएनएम ने कहा कि वे शांतिपूर्ण तरीके से अपनी मांगें अधिकारियों के समक्ष रख रही हैं। मांगों पर सकारात्मक निर्णय नहीं होने तक धरना जारी रहेगा। इसके लिए सदर ब्लॉक की सभी संविदा एएनएम ने सामुदायिक अवकाश के लिए सीएमओ को प्रार्थना पत्र भी दिया है। इस दौरान अंजली पटेल, रीता भारती, बिन्दु, सारिका, सुमन, अनीता, आराध्या, बबिता, उर्मिला, बृजनंदिनी सिंह, मनोरमा, कंचन, उषा, सीमा आदि एएनएम मौजूद रहीं।

बाइक सवार युवक को बस ने रौंदा, मौत

संवाददाता–महराजगंज। मईल थाना क्षेत्र के भागलपुर चौराहे के समीप सलेमपुर–भागलपुर मार्ग पर गुरुवार को एक बाइक सवार को बस ने रौंद दिया। इससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मईल थाना क्षेत्र के ग्राम भागलपुर निवासी अजय यादव (25) पुत्र अशोक यादव एक गिट्टी–बालू की दुकान पर दोपहर बाद बाइक से गए थे। बाइक से लौटते समय अचानक उनकी बाइक अनियंत्रित होकर सड़क पर ही पलट गई। बाइक पलटते ही पीछे से सलेमपुर की तरफ से आ रही एक बस ने उसे रौंद दिया। अजय यादव की मौके पर ही मौत हो गई।

सूचना मिलते ही मौके पर सैकड़ों लोग पहुंच गए। पुलिस ने शव कब्जे में लेकर यातायात व्यवस्था बहाल की। युवक की मौत की सूचना घर पहुंचते ही परिवार के लोग दहाड़ें मारकर रोने लगे। परिवार के लोगों को रोता देख वहां मौजूद अन्य लोगों की भी आंखें भर आ रही थीं।

सीसी सड़क निर्माण में मानकों की अनदेखी का आरोप लगा प्रदर्शन, काम बंद

संवाददाता–महराजगंज। परसामलिक थाना क्षेत्र के ग्राम बैकुंठपुर उर्फ बोदरवार में दर्जनों की संख्या में ग्रामीणों ने सीसी सड़क निर्माण में मानकों की अनदेखी का आरोप लगाकर प्रदर्शन किया। मानकविहीन सीसी सड़क निर्माण कार्य का आरोप लगाकर विरोध प्रदर्शन किया। ग्रामीणों के विरोध के बाद पीडब्ल्यूडी ने सड़क निर्माण कार्य को बंद करा दिया है। नौतनवां ब्लाक के भगवानपुर मदरी से चखनी चौराहे तक पीडब्ल्यूडी विभाग द्वारा सड़क निर्माण कार्य कराया जा रहा है। गांव से होकर गुजरने वाली सड़क पर कुछ जगहों पर सीसी रोड कार्य कराया जा रहा है। बैकुंठपुर उर्फ बोदरवार गांव में सीसी सड़क निर्माण कार्य की गुणवत्ता पर सवाल उठाते हुए ग्रामीणों ने विरोध प्रदर्शन किया।

ग्रामीण दिग्विजय सिंह, ज्ञान सिंह, नंदलाल चौधरी, जय सिंह, जितेन्द्र चौधरी, मोहित वरूण, दुर्विजय चौहान, कुण्डल, राकेश पासवान, साधु शरण पासवान, भगेलू चौधरी, रामसुभग यादव, केदार चौधरी, त्रिभुवन चौधरी, रामसजन यादव, प्रदीप चौहान, गणेश चौधरी आदि ग्रामीणों ने विरोध प्रदर्शन करतेे हुए आरोप लगाया कि सीसी निर्माण कार्य मानक व गुणवत्ता विहीन कराया जा रहा है। ग्रामीणों का कहना है कि सीसी सड़क सिर्फ चार इंच ही ढाली जा रही है। इसमें सरिया भी नहीं डाला जा रहा है। सीसी सड़क मजबूत नहीं बनेगी तो जल्दी टूट जाएगी। ग्रामीणों के विरोध के बाद निर्माण कार्य बन्द हो गया है।इस संबंध में पीडब्ल्यूडी विभाग के जेई राहुल प्रसाद जिज्ञासु का कहना है कि सीसी सड़क निर्माण कार्य मानक के अनुरूप कराया जा रहा है। ग्रामीणों का आरोप निराधार है।

विकास कार्यों में लापरवाही बर्दाश्त नहीं, लंबित परियोजनाएं पूरी करें –सूर्य प्रताप शाही

संवाददाता–देवरिया। गुरुवार को जिला स्तरीय विकास कार्य अनुश्रवण समिति 'दृष्टि' की बैठक हुई। विकास भवन के गांधी सभागार में दोपहर एक बजे से शाम चार बजे तक चली बैठक की अध्यक्षता कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने की। इस दौरान जिले में चल रहे विकास और निर्माण कार्यों के साथ जनकल्याणकारी योजनाओं की विभागवार समीक्षा की गई। कृषि मंत्री ने अधिकारियों को सभी कार्य तय समय सीमा में गुणवत्ता के साथ पूरा करने के निर्देश दिए।

कृषि मंत्री ने कहा कि सरकारी योजनाओं का व्यापक स्तर पर प्रचार–प्रसार किया जाए, ताकि पात्र लोगों को योजनाओं का लाभ सही तरीके से मिल सके। बैठक में समाज कल्याण विभाग की शादी अनुदान, ओ–लेवल/सीसीसी प्रशिक्षण और छात्रवृत्ति योजनाओं की समीक्षा की गई। पशुपालन विभाग की मिनी नंदिनी कृषक समृद्धि, बैकयार्ड पोल्ट्री, बकरी–भेड़ पालन और सहभागिता फंड योजनाओं की प्रगति की भी जानकारी ली गई।

ग्राम्य विकास विभाग की बाबा साहब आंबेडकर रोजगार प्रोत्साहन, सामुदायिक भवन और मुख्यमंत्री आवास योजना–ग्रामीण की प्रगति की समीक्षा की गई। कृषि विभाग की कृषक जागरूकता, मक्का विकास, मिलेट्स पुनरोद्धार, संकर बीज और दलहन–तिलहन व मिलेट्स बीज मिनीकिट वितरण योजनाओं की भी जानकारी ली गई।

इसके अलावा भूमि संरक्षण, उद्यान, सहकारिता, शिक्षा, एमएसएमई, बिजली, सिंचाई, जल संसाधन, मत्स्य, श्रम, सेवायोजन, अतिरिक्त ऊर्जा, बाल विकास, कौशल विकास, नमामि गंगे, पर्यटन, गन्ना, खाद्य एवं विपणन, लघु सिंचाई और स्वास्थ्य विभाग की योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की गई।

सड़क और पुल निर्माण से जुड़ी परियोजनाओं की भी समीक्षा हुई। कृषि मंत्री ने लंबित परियोजनाओं को प्राथमिकता के आधार पर पूरा करने और निर्माण कार्यों में गुणवत्ता बनाए रखने के निर्देश दिए। गन्ना भुगतान की समीक्षा करते हुए किसानों का पूरा भुगतान सुनिश्चित करने को कहा। जलापूर्ति परियोजनाओं के तहत पाइपलाइन बिछाने के बाद खराब हुई सड़कों की तत्काल मरम्मत कराने के निर्देश दिए।

कृषि मंत्री ने कहा कि विकास कार्यों में किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। सभी विभाग निर्धारित समय सीमा में कार्य पूरा कर उसकी गुणवत्ता सुनिश्चित करें।

बैठक में रामपुर कारखाना विधायक सुरेंद्र चौरसिया, एमएलसी प्रतिनिधि राजू मणि समेत अन्य जनप्रतिनिधि मौजूद रहे। ब्लॉक प्रमुख सुब्रत शाही सहित अन्य ब्लॉक प्रमुख, मुख्य विकास अधिकारी राजेश कुमार सिंह और संबंधित विभागों के अधिकारी भी बैठक में शामिल हुए।

आशा बहुओं में मारपीट, बाल पकड़कर एक–दूसरे को जमीन पर पटका

संवाददाता–गोण्डा। जिला महिला अस्पताल में गुरुवार दोपहर करीब 12 बजे दो आशा बहुओं के बीच विवाद हो गया। यह विवाद एक मरीज को डॉक्टर को दिखाने को लेकर हुआ। दोनों आशा बहू मरीज को अपना बताकर दिखाना चाह रही थीं। इसी बात पर पहले उनके बीच कहासुनी और गाली–गलौज हुई। कहासुनी के बाद निर्मला मिश्रा और सरोज तिवारी नाम की दोनों आशा बहुओं ने अस्पताल के अंदर ही मारपीट शुरू कर दी। मारपीट का एक वीडियो सामने आया है। इसमें साफ दिख रहा है कि दोनों आशा बहुओं एक–दूसरे के बाल पकड़कर जमीन पर गिरा करके मारपीट कर रही हैं। वीडियो वायरल होने के बाद गोंडा जिला महिला अस्पताल के सीएमएस ने पूरे मामले की जांच के आदेश दिए हैं। अस्पताल से पहले भी ऐसे कई विवाद सामने आ चुके हैं, जहां मरीज दिखाने को लेकर आशा बहुएं आपस में झगड़ती रही हैं। आशा बहू निर्मला मिश्रा कटरा बाजार की रहने वाली हैं, जबकि सरोज तिवारी मुजेहना की निवासी हैं। दोनों अपने काम से गोंडा जिला महिला अस्पताल पहुंची थीं। गोंडा जिला महिला अस्पताल के सीएमएस डॉ. शंभू दयाल ने बताया कि मामला उनके संज्ञान में आया है। उन्होंने वायरल वीडियो भी देखा है। डॉ. दयाल ने कहा कि पूरे मामले की जांच कराई जा रही है। उन्होंने साफ किया कि इस तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी और दोषी आशा बहुओं के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। आपको बता दें कि गोंडा जिला महिला अस्पताल का पहला मामला नहीं है इससे पहले भी कई बार आशा बहू आपस में मरीज दिखाने को लेकर कमीशन को लेकर के मारपीट कर चुकी है। यह ऐसी आशा बहू है जो अपने क्षेत्र को छोड़कर के गोंडा महिला अस्पताल में दिनभर रहती है और मरीज दिखती हैं।

24 घंटे ड्यूटी, चार हजार वेतन, पंप ऑपरेटरों ने उठाई आवाज

संवाददाता–महराजगंज। जिले के विभिन्न स्थानों पर तैनात पंप ऑपरेटरों ने कंपनी पर समय से वेतन नहीं देने व भुगतान में अनियमितता का आरोप लगाया है। उन्होंने जिलाधिकारी को शिकायत पत्र देकर मामले की जांच कराने, नियमित भुगतान सुनिश्चित करने व महंगाई के हिसाब से मजदूरों के लिए निर्धारित दर के आधार पर पारिश्रमिक दिलाने की मांग की।पम्प ऑपरेटरों के मुताबिक उनसे 24 घंटे ड्यूटी ली जाती है, जबकि इसके बदले महज चार हजार रुपये प्रतिमाह पारिश्रमिक दिया जा रहा है। बताया महंगाई के इस दौर में चार हजार रुपये में परिवार चलाना मुश्किल है। इतनी कम रकम तो कई जगह दिहाड़ी मजदूर की मजदूरी से भी कम पड़ती है।

ऐसे में काम के घंटे और जिम्मेदारी को देखते हुए मजदूरों के लिए लागू दर के आधार पर पारिश्रमिक तय किया जाना चाहिए। नियमित भुगतान नहीं होने से आर्थिक परेशानी और बढ़ जाती है। उन्होंने बताया कि कंपनी की ओर से अब तक स्पष्ट लिखित आदेश व नियुक्ति पत्र भी उपलब्ध नहीं कराया गया है। शिकायत में पंप परिसर व पानी की टंकियों की नियमित सफाई नहीं होने का मुद्दा भी उठाया गया है। टंकी में लीकेज और परिसर में गंदगी की समस्या का जिक्र करते हुए ऑपरेटरों ने कहा कि कई बार पंप का फ्यूज उड़ने जैसी तकनीकी खराबी आने पर उन्हें अपनी जेब से खर्च कर मरम्मत करानी पड़ती है। इस दौरान रमेश यादव, वीरेंद्र, गोविन्द, विपिन गौतम, सदानंद, जमालूद्दीन, मुन्नी, मंजीत, राजेश्वर यादव, श्रीराम, कमलेश, रामकिशुन, संजीव कुमार, मंतोष, मोहन, राम मोहन त्रिपाठी, राहुल शिवम, अभिषेक आदि लोग मौजूद रहे।

ज्ञान की धरोहर से ही विश्वगुरु था भारत, आक्रांताओं पर बरसे सीएम योगी

संवाददाता—गोरखपुर। गोरखपीठाधीश्वर एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि विदेशी आक्रांताओं ने न सिर्फ भारत का वैभव लूटा, बल्कि उसकी ज्ञान परंपरा और बुद्धि को भी नष्ट करने का प्रयास किया। मंदिरों पर हमले आक्रांताओं की इसी सोच का हिस्सा थे। ब्रिटिश काल में सिर्फ इस प्रयास का तरीका बदला। ब्रिटिशर्स ने भ्रम पैदा कर भारतीयों को उनकी परंपरा, मूल्यों और जड़ों से काटने का प्रयास किया गया। उन्होंने कहा कि अब अपनी ज्ञान परंपरा को पहचानने, उसे प्रमाणों के साथ दुनिया के सामने रखने और आधुनिक तकनीक से जोड़कर नई पीढ़ी तक पहुंचाने का समय है। सीएम योगी गुरुवार को, युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की 57वीं और राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज की 12वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में समसामयिक विषयों पर सम्मेलन श्रृंखला के पहले दिन 'भारतीय ज्ञान परंपरा का वर्तमान परिप्रेक्ष्य' विषयक सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे थे। गोरखनाथ मंदिर परिसर के महंत दिग्विजयनाथ स्मृति भवन सभागार में आहूत सम्मेलन में मुख्यमंत्री ने भारतीय ज्ञान परंपरा पर, प्राचीन से लेकर वर्तमान परिदृश्य का विशद शब्द चित्र खींचा। उन्होंने रामायण काल में दंडकारण्य में ऋषियों के आश्रमों पर हमलों का उल्लेख करते हुए कहा कि राक्षसी और दानवी शक्तियां हों या विदेशी आक्रांता, भारत पर हमले का उद्देश्य वैभव लूटने के साथ उसकी ज्ञान धरोहर को नष्ट करना भी रहा। उन्होंने सोमनाथ मंदिर पर महमूद गजनवी के आक्रमण की चर्चा करते हुए कहा कि मंदिर को तोड़ने का उद्देश्य केवल लूटपाट नहीं, बल्कि सनातन परंपरा को नष्ट करना भी था। सीएम योगी ने कहा कि ब्रिटिश काल में तरीका बदल गया। भारतीयों को अपनी भाषा, चिकित्सा पद्धति और ज्ञान परंपरा को लेकर भ्रमित किया गया। संस्कृत के स्थान पर अंग्रेजी और परंपरागत चिकित्सा पद्धति के स्थान पर आधुनिक चिकित्सा को महत्व दिया गया। परिणाम यह हुआ कि हम धीरे-धीरे अपनी परंपरा, मूल्यों और जड़ों से कटते गए।

सीएम योगी ने कहा कि प्राचीन कालखंड में भारत का ज्ञान हर क्षेत्र में अद्भुत और सर्वश्रेष्ठ था। भाषा, व्याकरण, अर्थशास्त्र, विज्ञान, खगोल, आयुष, ज्योतिष, शिल्प, तकनीकी आदि जो भी क्षेत्र हैं, भारत के प्राचीन विश्वविद्यालयों में उसी तरह के श्रेष्ठ स्नातक दिए। भारत की इस समृद्ध ज्ञान परंपरा को संरक्षित करके हम लोक मंगल के उद्देश्य से दुनिया को बहुत कुछ दे सकते हैं। उन्होंने कहा कि नई पीढ़ी को पाणिनि, पतंजलि, आयुर्वेद के आचार्यों और चाणक्य के अर्थशास्त्र जैसी विरासत से परिचित कराना होगा। करीब तीन हजार वर्ष पहले नैमिषारण्य में 88 हजार ऋषि श्रवण परंपरा से प्राप्त ज्ञान को लिपिबद्ध करने के लिए एकत्र हुए थे। सीएम योगी ने राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की पंक्तियों, 'हम कौन थे, क्या हो गये हैं और क्या होंगे अभी, आओ विचारें आज मिलकर यह समस्याएं सभी' का उल्लेख करते हुए कहा कि भूत, वर्तमान और भविष्य के मुद्दों को लेकर भारत के विद्वानों ने हमेशा से चिंतन किया है। चिंतन की उसी परंपरा को ध्यान में रखकर भारतीय ऋषि परंपरा सदैव अपनी धरोहर को किसी न किसी रूप में संरक्षित भी करती रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि दुनिया के अंदर अकेले भारतीय समाज ही है जिसने ज्ञान को केवल अक्षर सीखने या भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति सीमित नहीं रखा। भारत की परंपरा ने विद्या को मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करने वाला माध्यम माना है। मुख्यमंत्री ने कहा कि भारत के पास दुनिया की सबसे अच्छी जलवायु, सबसे अच्छी उर्वरा भूमि, सबसे अच्छा जल संसाधन है। सबकुछ होने के बाद भी भारत यदि विश्व गुरु कहलाता था तो ज्ञान की अपनी परंपरा के कारण। ज्ञान की धरोहर पर एकाधिकार हमारा था। उन्होंने कहा कि आज के कई विकसित देशों का इतिहास 400 से 500 वर्षों का है, जबकि भारत में 2600 वर्ष पहले तक्षशिला और करीब 1700 से 1800 वर्ष पहले नालंदा जैसे विश्वविद्यालय थे। काशी, उज्जैन, कांची भी ज्ञान के प्रमुख केंद्र रहे। उन्होंने कहा कि कुंभ केवल स्नान का आयोजन नहीं था। प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक–त्र्यंबकेश्वर में संत और विद्वान अपने शोध और नवाचार पर चर्चा करते थे। भारतीय समाज ने अपने पर्व, त्योहार और मांगलिक कार्यों को आज भी भारतीय हिंदू पंचांग से जोड़ रखा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि पीएम मोदी ने 2016 में यूनाइटेड नेशंस में इस बात का प्रस्ताव रखा कि भारत की योग की परंपरा को वैश्विक मान्यता मिलनी चाहिए। आज दुनिया के लगभग 190 देश 21 जून की तिथि को विश्व योग दिवस के रूप में मनाते हैं। योग की इस परंपरा के साथ सभी जुड़ जाते हैं। उन्होंने कहा कि 2014 में मोदी जी प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने भारत की परंपरागत चिकित्सा पद्धति को, यानी ट्रेडिशनल मेडिसिन को आयुष मंत्रालय के रूप में मान्यता दी। उसमें आयुर्वेद है, योग है, नेचुरोपैथी है, सिद्धा है, यूनानी है, होम्योपैथ है। ये सभी परंपरागत चिकित्सा पद्धतियां थीं। ये परंपराएं उसी रूप में आगे बढ़ीं और आज वैश्विक मान्यता प्राप्त कर रही हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2020 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों को भारत की ज्ञान परंपरा को संरक्षित करने के लिए, आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। उसी क्रम में भारत के अंदर जहां–तहां बिखरी पड़ी प्राचीन पांडुलिपियों, शिलालेखों, ताम्रपत्रों और चर्मपत्रों को संरक्षित करने की बात प्रारंभ हुई। आधुनिकता के मोह में पड़ा हुआ समाज, परिवार उनके महत्व को नहीं समझ पा रहा था। आज जब उस पर कार्य हो रहा है और उनके बारे में जब लोग जानने की इच्छा व्यक्त कर रहे हैं, अब उसका महत्व सबकी समझ में आ रहा है। सीएम योगी ने बताया कि संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय काशी में एक लाख से अधिक प्राचीन पांडुलिपियां एकत्र की गई हैं और उनके संरक्षण तथा डिजिटाइजेशन का कार्य चल रहा है। परिवारों, विद्वानों के घरों, प्राचीन मठों और मंदिरों में भी ऐसी ज्ञान धरोहर मौजूद है। अयोध्या, प्रयागराज, मथुरा–वृंदावन और लखनऊ समेत विभिन्न स्थानों पर पांडुलिपियां, ताम्रपत्र और शिलालेख मिले हैं। सीएम योगी ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा को आगे बढ़ाने में तीन पक्ष सामने होंगे। पहला सत्य का है, इसलिए जो भी कहें, प्रमाणित करके कहें। दूसरा विरोधियों का है, जो उसे असत्य ठहराने का प्रयास करेंगे और तीसरा दुष्प्रचार करने वालों का है, जो संशय पैदा करेंगे। तकनीक ऐसे संशय को दूर करने में बड़ी मदद कर सकती है। इसे समयानुकूल बनाकर ज्ञान परंपरा को आगे बढ़ाना होगा। सीएम ने कहा कि आज अपनी ऋषि परंपरा के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए, भारत को भारतीयता का एहसास कराने के लिए भारत के अंदर भारतीय ज्ञान परंपरा की शोध पीठ की स्थापना का कार्य फिर से प्रारंभ हुआ है। उन्होंने शिक्षण संस्थानों का आह्वान करते हुए कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़े हुए उन सभी धरोहरों के संरक्षण के लिए वर्तमान पीढ़ी को अवगत कराने के लिए यह सबसे उपयुक्त समय है। सम्मेलन में अपने विचार व्यक्त करते हुए मुख्य अतिथि, सुग्रीव किलाधीश अयोध्याधाम से पधारे जगद्गुरु विश्वेश प्रपन्नाचार्य जी महाराज ने कहा कि भारत, ज्ञान का अप्रतिम विश्वकोश है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने उस ज्ञान को समझा है और आज चारों तरफ उसका विकास हो रहा है। स्वामी प्रपन्नाचार्य ने कहा कि अतीत में ज्ञान का माध्यम फिजिकल था अर्थात कठिन परिश्रम करने के बाद ज्ञान प्राप्त होता था। तप के इस स्वरूप में समय भी लगता है। आज इसका स्वरूप डिजिटल हो गया है। आज ज्ञान के लिए क्लिक और डिलीट करने की बात होती है। उन्होंने कहा कि जिस जीवन को जीने के लिए हमारे पूर्वजों ने साधना की और ज्ञान प्राप्त किया, आज उसके मूल को संभालने की आवश्यकता है। इस अवसर पर अशर्फी भवन अयोध्याधाम से पधारे जगद्गुरु स्वामी श्रीधराचार्य जी महाराज ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा आत्मज्ञान से परमात्म ज्ञान की ओर ले जाती है।

मेरे सपनों का भारत थीम पर बच्चों ने उकेरी विकसित भारत की तस्वीर

—प्रतियोगिता में शादिया प्रथम, मडोना द्वितीय, आयुषी तृतीय स्थान पर रहीं

—भारतीय बस्ती संवाददाता—

बस्ती। सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत गुरुवार को 'मेरे सपनों का भारत' थीम पर ब्लॉक स्तरीय चित्रकारी एवं प्रदर्शनी प्रतियोगिता का आयोजन हर्रैया ब्लॉक सभागार में किया गया। प्रतियोगिता में ब्लॉक के विभिन्न परिषदीय विद्यालयों के बच्चों ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग करते हुए चित्रों और प्रदर्शनी के माध्यम से अपने सपनों के भारत की कल्पना को रंगों में उकेरा। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि हर्रैया योगेंद्र सिंह, मेरे सपनों का भारत थीम के प्रभारी राजेश त्रिपाठी और भाजपा मंडल अध्यक्ष शिवचरन जायसवाल ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलित कर किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता खंड शिक्षा अधिकारी विजय आनंद ने की।

प्रतियोगिता में बच्चों ने भारत की प्रगति, शिक्षा, स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, तकनीकी विकास, आत्मनिर्भरता और राष्ट्र निर्माण जैसे विषयों को अपनी चित्रकारी और प्रदर्शनी के माध्यम से प्रस्तुत किया। निर्णायक मंडल ने प्रतिभागी बच्चों की चित्रकारी, प्रदर्शनी की विषयवस्तु, रचनात्मकता और प्रस्तुतिकरण का अवलोकन किया। इसके बाद उच्च प्राथमिक विद्यालय बरसपुर की छात्रा शादिया ने प्रथम, कंपोजिट विद्यालय पूरे अवधी की छात्रा मडोना सिंह ने द्वितीय तथा कंपोजिट विद्यालय उभाई की छात्रा आयुषी वर्मा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। विजेता बच्चों को मेडल और शील्ड देकर सम्मानित किया गया। वहीं प्रतियोगिता में शामिल अन्य सभी बच्चों को स्टेशनरी प्रदान कर उनका उत्साहवर्धन किया गया। मुख्य अतिथि योगेंद्र सिंह ने कहा कि बच्चों की कल्पनाशीलता में ही देश के भविष्य की तस्वीर दिखाई देती है। ऐसे आयोजनों से विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के साथ–साथ राष्ट्र और समाज के प्रति अपनी सोच को अभिव्यक्त करने का अवसर मिलता है। राजेश त्रिपाठी ने कहा कि 'मेरे सपनों का भारत' जैसी थीम बच्चों को अपने भविष्य के भारत के बारे में सोचने और उसे रचनात्मक माध्यम से व्यक्त करने के लिए प्रेरित करती है। उन्होंने प्रतिभागी बच्चों की प्रतिभा की सराहना करते हुए कहा कि विद्यालय स्तर से ही बच्चों की रचनात्मक क्षमता को प्रोत्साहित करना जरूरी है। प्रदर्शनी एवं चित्रकारी का अवलोकन अतिथियों, खण्ड शिक्षा अधिकारी और शिक्षकों ने किया। अवलोकन के उपरान्त एआरपी संतोष कुमार शुक्ल, मनोज मिश्र, राजीव शुक्ल और रवीश कुमार मिश्र ने प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान का निर्धारण किया। कार्यक्रम का संचालन विवेक कान्त पाण्डेय ने किया।

इस दौरान शिक्षक को के ब्लॉक अध्यक्ष राम सागर वर्मा, उदय प्रताप सिंह, राम तौल शर्मा, श्री नारायन मिश्र, ओम प्रकाश, अरुण शुक्ल, प्रमोद त्रिपाठी, नित्यानंद यादव, शोभाराम, छोटेलाल, अरुण साहू, निरुपमा तिवारी, सीमा, रोली सिंह, मनोज द्विवेदी, चंद्रशेखर, राम सागर, संजय सिंह, विजय मिश्र, बृजेश ओझा, आशीष सिंह, प्रेम कुमार, प्रभात रंजन, राजन सिंह, पवन वर्मा, वीरेंद्र, मनोज वर्मा, लालमणि वर्मा, प्रदीप शुक्ल, सुनील कुमार, रिजवान, विवेकानंद शुक्ल, राजेश, राकेश, जमुना सहित विद्यालयों के शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

योगासन में खिलाड़ियों ने दिखाया दम, विजेता हुए पुरस्कृत

—भारतीय बस्ती संवाददाता—

बस्ती। राजकीय इंटर कॉलेज बस्ती के सभागार में गुरुवार को जनपद स्तरीय योगासन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का शुभारंभ विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. विजय प्रकाश ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन कर किया। विभिन्न विद्यालयों से पहुंचे प्रतिभागियों ने अलग–अलग वर्गों में योगासन का शानदार प्रदर्शन कर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। सीनियर बालक वर्ग ट्रेडिशनल योगासन में झिनकू लाल त्रिवेणी राम चौधरी इंटर कॉलेज कलवारी के अमित यादव ने प्रथम तथा रोहित कुमार ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। अंडर–17 बालक वर्ग में पंडित दीनदयाल उपाध्याय राजकीय इंटर कॉलेज बभनान के आयुष ने प्रथम और राजकीय हाईस्कूल खखुवा के दिव्यांशु ने द्वितीय स्थान हासिल किया। अंडर–17 बालिका वर्ग में राजकीय हाईस्कूल खखुवा की पूजा प्रथम और राजकीय कन्या इंटर कॉलेज बस्ती की शशि द्वितीय रहीं। अंडर–14 बालक वर्ग में राजकीय हाईस्कूल खखुवा के सागर प्रथम और झिनकू लाल इंटर कॉलेज कलवारी के निखिल द्वितीय रहे। अंडर–14 बालिका वर्ग में गन्ना विकास इंटर कॉलेज मुंडेरवा की दिव्या कुमारी ने प्रथम तथा राजकीय हाईस्कूल खखुवा की अंशु ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। आर्टिस्टिक योगासन में राजकीय हाईस्कूल खखुवा के अनिकेत ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। रिदमिक योगासन में विशेष एवं नितेश की जोड़ी ने प्रथम स्थान हासिल किया। आर्टिस्टिक सिंगल में अनिकेत प्रथम और झिनकू लाल इंटर कॉलेज कलवारी के वेद प्रकाश द्वितीय रहे। रिदमिक सिंगल में राजकीय हाईस्कूल खखुवा के कलीम प्रथम तथा वेद प्रकाश द्वितीय स्थान पर रहे। प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका डॉ. जगन्नाथ यादव, विवेक श्रीवास्तव, अरुण कुमार, सुभाष यादव, रमेश चंद्र गुप्ता और संतोष कुमार पाण्डेय ने निभाई। संचालन अजय कुमार वर्मा ने किया। आयोजक विद्यालय के शिक्षक एवं मंडलीय क्रीड़ा सचिव अमित यादव ने अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया। समापन अवसर पर प्रधानाचार्य डॉ. विजय प्रकाश ने विजेता प्रतिभागियों को मेडल एवं शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया। इस दौरान गीता उपाध्याय, सविता सिंह, संघलता गौतम सहित विद्यालय परिवार के चंद्रभान पांडे, विवेक मणि त्रिपाठी, अजय प्रकाश, लाल श्रीवास्तव, जितेंद्र कुमार, बलवंत सिंह पटेल आदि मौजूद रहे।

बारिश से बदला मौसम

संवाददाता—सिद्धार्थनगर। कई दिनों से बारिश थमने के बाद तेज धूप और उमस से परेशान जिलेवासियों को गुरुवार सुबह राहत मिल गई। सुबह करीब छह बजे से जिले के कई हिस्सों में बारिश शुरू हो गई। लगातार वर्षा होने से मौसम ठंडा हो गया और वातावरण में बनी उमस काफी कम हुई। आसमान में बादल छाए रहने से दिन के तापमान में भी गिरावट दर्ज की गई। बारिश से लोगों को गर्मी से राहत मिली, वहीं किसानों के चेहरे पर भी मौसम को लेकर राहत नजर आई। पश्चिम बंगाल की खाड़ी के ऊपर बने गहन दबाव से विकसित चक्रवाती तूफान के प्रभाव से जिले के मौसम में बदलाव आया है। मौसम विभाग ने गुरुवार से बारिश का दौर शुरू होने का अनुमान जताया था। इसके तहत अगले तीन दिनों तक जिले में हल्की से मध्यम बारिश होने के साथ कुछ स्थानों पर भारी वर्षा की संभावना है।

27 सितंबर तक वर्षा का क्रम बने रहने के आसार हैं। लगातार चार–पांच दिनों से बारिश नहीं होने के कारण दिन में तेज धूप के साथ वातावरण में काफी उमस थी। गुरुवार सुबह हुई बारिश के बाद मौसम में अचानक बदलाव आया। ठंडी हवा चलने और बादल छाए रहने से तापमान में भी गिरावट महसूस की गई। मौसम विभाग के अनुसार अगले कुछ दिनों में अधिकतम तापमान में करीब आठ से 10 डिग्री सेल्सियस तक गिरावट आ सकती है।

पश्चिमी यूपी में विपक्ष का सूपड़ा साफ करेगी रालोद —अनिल कुमार

संवाददाता—गोरखपुर। राष्ट्रीय लोकदल ने 2027 के विधानसभा चुनाव को लेकर पश्चिमी उत्तर प्रदेश में सियासी जमीन मजबूत करने की तैयारी तेज कर दी है। योगी सरकार में रालोद कोटे से विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री अनिल कुमार ने दावा किया कि आगामी विधानसभा चुनाव में रालोद पश्चिमी यूपी में विपक्ष का सूपड़ा साफ करेगी। उन्होंने कहा कि एनडीए में रहते हुए पार्टी की रणनीति इस बार अधिक से अधिक विधानसभा सीटों पर दावेदारी करने की है।

अनिल कुमार, गुरुवार को वीर बहादुर सिंह नक्षत्रशाला एवं महंत अवेद्यनाथ ज्ञान विज्ञान पार्क के निर्माण कार्यों का निरीक्षण करने आए थे। अनिल कुमार ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अगुवाई में 2027 में एनडीए गठबंधन दो तिहाई बहुमत के साथ प्रदेश में लगातार तीसरी बार सरकार बनाएगा। उन्होंने कहा कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में रालोद का संगठन लगातार मजबूत हो रहा है। पार्टी कार्यकर्ता चुनावी तैयारियों में जुट चुके हैं।

चुनावी सरगर्मियां बढ़ने के साथ रालोद के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय राज्यमंत्री चौधरी जयंत सिंह ने भी पश्चिमी यूपी में अपनी सक्रियता बढ़ा दी है। उनके लगातार दौरे और संगठनात्मक गतिविधियों को पार्टी की चुनावी तैयारियों से जोड़कर देखा जा रहा है। रालोद की कोशिश पश्चिमी यूपी में अपने प्रभाव वाले क्षेत्रों के साथ नए इलाकों में भी संगठन का विस्तार करने की है।

एनडीए गठबंधन में 2027 के लिए सीट बंटवारे की तस्वीर अभी स्पष्ट नहीं है, लेकिन रालोद की ओर से अधिक सीटों पर दावेदारी की रणनीति ने गठबंधन के भीतर चुनावी तैयारियों को दिलचस्प बना दिया है। पश्चिमी यूपी को रालोद के लिए अहम राजनीतिक क्षेत्र माना जाता है। ऐसे में जयंत सिंह की सक्रियता और पार्टी नेताओं के दावों के बीच आने वाले महीनों में गठबंधन के भीतर सीटों को लेकर बातचीत भी महत्वपूर्ण होगी।

सूचना

सूचित किया जाता है कि मेरे आधार कार्ड में मेरा नाम अविनाश कुमार चौधरी Avinash kumar Chaudhary पुत्र विद्यासागर चौधरी है जो सही है, जबकि ड्राइविंग लाइसेंस में अविनाश कुमार चौधरी के स्थान पर Avnish kumar Chaudhary हो गया है जो गलत है। उसे सुधारकर अविनाश कुमार चौधरी Avinash kumar Chaudhary कराया जाय।

(अविनाश कुमार चौधरी)
निवासी पिकौरादत्तूराय निकट भटोलवा पोस्ट– गांधीनगर
जनपद–बस्ती

सूचना

मेरे आधार कार्ड में devendra kumar Verma है, जो सही है, जबकि ड्राइविंग लाइसेंस में davendra kumar Verma है जो कि गलत है। उसे सुधारकर devendra kumar Verma कराया जाय।

(देवेन्द्र कुमार वर्मा)
वार्ड नंबर 04 पटेल नगर बभनान
जनपद–बस्ती

आजाद समाज पार्टी का हंगामाः जंतर–मंतर पर आंदोलन की परमिशन न मिलने पर भड़के कार्यकर्ता

संवाददाता—गोरखपुर। दिल्ली के जंतर–मंतर पर आयोजित होने वाले शंतिपूर्ण भागीदारी महाआंदोलन को प्रशासनिक अनुमति न दिए जाने के विरोध में गुरुवार को गोरखपुर की सड़कों पर आजाद समाज पार्टी (कांशीराम) और भीम आर्मी का भारी आक्रोश देखने को मिला। दोपहर करीब 12 बजे सैकड़ों की संख्या में कार्यकर्ता और पदाधिकारी शहर के अंबेडकर चौराहे पर इकट्ठा हो गए।

कार्यकर्ताओं ने केंद्र और राज्य सरकार की नीतियों के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। प्रदर्शन की अगुवाई कर रहे पार्टी के प्रदेश संगठन मंत्री अवनीश निगम के साथ अन्य कार्यकर्ताओं ने सरकार पर दमनकारी नीति अपनाने का सीधा आरोप लगाया। उनका कहना है कि दिल्ली में होने वाला यह महाआंदोलन पूरी तरह से शांतिपूर्ण और संवैधानिक था, जिसमें देशभर से दलित, पिछड़े, आदिवासी और अल्पसंख्यक समाज के लोग अपने बुनियादी हक मांगने आ रहे थे। लेकिन प्रशासन को ढाल बनाकर आंदोलन की अनुमति रद्द कर दी गई, जो सीधे तौर पर लोकतांत्रिक अधिकारों का हनन है। कार्यकर्ताओं का साफ आरोप है कि सरकार जनहित और सामाजिक न्याय के मुद्दों पर जवाब देने से बच रही है और विपक्ष की आवाज को दबाने का हर संभव प्रयास कर रही है। प्रदेश संगठन मंत्री अवनीश निगम ने कहा कि पार्टी की मांग है कि देश के चार प्रमुख मेडिकल कॉलेजों में एससी और एसटी वर्ग के लिए लागू 70 प्रतिशत आरक्षण को खत्म करने का जो प्रयास किया जा रहा है, उसे तुरंत रोका जाए और पुराना कोटा बहाल रखा जाए।

इसके अलावा, देश की अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) की विशाल आबादी को उनकी संख्या के अनुपात में लोकसभा और राज्यों की विधानसभाओं में आरक्षण दिया जाए ताकि राजनीतिक फैसलों में उनकी बराबरी की भागीदारी सुनिश्चित हो सके। करीब दो घंटे तक चले इस जोरदार विरोध–प्रदर्शन और नारेबाजी के बाद कार्यकर्ता जिलाधिकारी कार्यालय पहुंचे।

डीएम को राष्ट्रपति को संबोधित एक ज्ञापन सौंपा। पार्टी पदाधिकारियों ने चेतावनी दी है कि यह प्रदर्शन तो महज एक शुरुआत है। अगर सरकार ने उनकी जायज मांगों पर जल्द कोई सकारात्मक निर्णय नहीं लिया और दमनकारी नीतियां बंद नहीं कीं, तो आने वाले दिनों में आजाद समाज पार्टी और भीम आर्मी मिलकर विधानसभा का घेराव करेगी।

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)
न्यायालय–श्रीमान ग्राम न्यायालय भानपुर जिला–बस्ती
वाद सं0–553/2022
अली हसन
बनाम
हन्नान आदि

1 हन्नान उम्र लगभग 40 वर्ष पुत्र मोहम्मद नसीब 2. अजमत अली उर्फ फैसल उम्र लगभग 35 वर्ष पुत्र अकबर अली 3. निसार अहमद उम्र लगभग 38 वर्ष पुत्र अब्दुल तउआब 4. मनोज उम्र लगभग 22 वर्ष पुत्र चिनगोली 5. कमलावती उम्र लगभग 50 वर्ष पत्नी चिनगोली 6. शमशुन्निशा उम्र लगभग 65 वर्ष पत्नी अकबर अली निवासीगण मौजा जगतपुर तप्पा सिकन्दरपुर परगना बस्ती पूरब तहसील भानपुर जिला बस्ती
—प्रतिवादीगण प्रथम वर्ग

7. कशमुददुजा उम्र लगभग 70 वर्ष 8. शब्बीर अहमद उम्र लगभग 55 वर्ष पुत्रगण युसुफ निवासीगण मौजा जगतपुर तप्पा सिकन्दरपुर परगना बस्ती पूरब तहसील भानपुर जिला बस्ती
—प्रतिवादीगण द्वितीय वर्ग

9. मुख्तार अहमद उम्र लगभग 75 वर्ष पुत्र खातिर अली 10. शमीन अहमद उम्र लगभग 50 वर्ष पुत्र मुस्लिम 11. अनीस उम्र लगभग 20 वर्ष पुत्र शमीन अहमद निवासीगण मौजा जगतपुर तप्पा सिकन्दरपुर परगना बस्ती पूरब तहसील भानपुर जिला बस्ती
—प्रतिवादीगण तृतीय वर्ग

12. उपजिलाधिकारी भानपुर जिला बस्ती 13. तहसीलदार भानपुर जिला बस्ती 14. राजस्व निरीक्षक क्षेत्र लक्ष्मिन तहसील भानपुर जिला बस्ती 15. लेखपाल हल्का नं0–94 तहसील भानपुर जिला बस्ती 16. सरकार उ0प्र0 द्वारा कलेक्टर बस्ती 17. ग्राम पंचायत जगतपुर द्वारा प्रधान ग्राम जगतपुर तप्पा सिकन्दरपुर परगना बस्ती पूरब तहसील भानपुर जिला बस्ती
—प्रतिवादीगण चतुर्थ वर्ग

तारीख पेशी 17—10—2026

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 17 माह 10 सन 2026 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाजिर हो और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज जो जिनको आप अपनी जवाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

—द0 हाकिम

अदालती नोटिस

इत्तिलानामा दरख्वास्त हुसूल हुक्म मुशहर मन्सूखी डिसमिसी नालिश
(आर्डर 9 कायदा 9) (2)
अदालत–श्रीमान सिविल जज (सी0डि0) बस्ती जिला–बस्ती
प्रकीर्ण वाद सं0–39/2026
वाद सं0–156/2018
इरसाद अहम (मृतक)
बनाम
शमशुल हुदा

1– शमशुल हुदा उम्र लगभग 80 साल पुत्र शमशुल जोहा साकिन– बेइली, तप्पा– छपिया, परगना रसूलपुर, तहसील भानपुर, जनपद– बस्ती

तारीख पेशी 01—10—2026

हरगाह मुद्दई मजकूरुसदर ने इस अदालत में दरख्वास्त हुकूम मुशहर मन्सूखी डिसमिसी नालिश नाबुदा हस्ब हिदायत अदालत हाजा बतारीख माह सन ई0 पेश को है।

लिहाजा आपको इत्तिला दी जाती है कि आप इस अदालत में बतारीख 01 माह 10 सन 2026 या असालतन या बजरिये वकील अदालत हाजा या मुख्तार मजाज हस्ब जाप्ता और वाकिफ हाल मुकदमा में हाजिर होकर वजह (अगर कोई हो) जाहिर करें कि नाबुदां की दरख्वास्त क्यों न मन्जूर किया जाय।

मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)
न्यायालय–श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) बस्ती जिला–बस्ती
वाद सं0–02/2026
शिव शंकर
बनाम
बाबूराम आदि

1 बाबूराम उम्र करीब 75 वर्ष पुत्र विशेश्वर 2. जय प्रकाश उम्र करीब 49 वर्ष 3–धर्मेन्द्र उम्र करीब 39 वर्ष पुत्रगण मूसे 4. ओंकार उम्र करीब 48 वर्ष 5. ओम प्रकाश उम्र करीब 53 वर्ष पुत्रगण तित्तिल 6. गिरीश कुमार उम्र करीब 35 वर्ष पुत्र गौरीशंकर निवासीगण मौजा–पटहरी, तप्पा–बांसखोर, परगना बस्ती पूरब तहसील–रुधौली, जिला–बस्ती
– प्रतिवादीगण प्रथम वर्ग

7. सरवर अली उम्र करीब 53 वर्ष 8. अजमत अली उम्र करीब 50 वर्ष पुत्रगण गरीबुल्लाह 9. पप्पू उम्र करीब 43 वर्ष पुत्र मो0 हनीफ 10. मोहिदीन उम्र करीब 70 वर्ष पुत्र शोबराती 11. मो0 कलाम उम्र करीब 50 वर्ष 12. जलालुदीन उम्र करीब 48 वर्ष 13. नियामुदीन उम्र करीब 45 वर्ष 14. वजीहुदीन उम्र करीब 42 वर्ष पुत्रगण रोजन 15. अली हुसैन उम्र करीब 40 वर्ष 16. अकबाल हुसैन उम्र करीब 38 वर्ष 17. सहाबुदीन उम्र करीब 36 वर्ष 18. सराजुद्दीन उम्र करीब 33 वर्ष पुत्रगण मो0 रजा 19. सलाहुद्दीन उम्र करीब 40 वर्ष 20. अलाउद्दीन उम्र करीब 35 वर्ष 21. गुमरान उम्र करीब 20 वर्ष पुत्रगण निजामुद्दीन 22. शकीला खातून उम्र करीब 60 वर्ष पत्नी निजामुद्दीन निवासीगण मौजा–पटहरी, तप्पा–बांसखोर, परगना–बस्ती पूरब, तहसील–रुधौली, जिला–बस्ती
—प्रतिवादीगण द्वितीय वर्ग

तारीख पेशी 23—11—2026

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 23 माह 11 सन 2026 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाजिर हो और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज जो जिनको आप अपनी जवाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया। –द0 हाकिम

दैनिक भारतीय बस्ती
संस्थापक सम्पादक स्व. दिनेश चन्द्र पाण्डेय
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1–4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।
प्रबन्ध सम्पादक—दिनेश सिंह
संयुक्त सम्पादक—प्रदीप चन्द्र पाण्डेय
अयोध्या—फैजाबाद कार्यालय– चर्तुभुजी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट अयोध्या–फैजाबाद
लखनऊ कार्यालय– आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच. कानपुर रोड लखनऊ।
गोरखपुर कार्यालय– इलाहीबाग गोरखपुर।
मो0 9336715406, 8400925463
ई.मेल bhartiyabasti@gmail.com dainikbhartiyabasti@gmail.com